G20
भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग • INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वन्दे मातरम्

अर्धवार्षिक पत्रिका

26वाँ अंक

2022-23

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेज़री बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

ऑडिट दिवस समारोह 2022 की कुछ झलकियाँ

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लेते वरिष्ठ अधिकारीगण

सत्यमेव जयते

हिन्दी पत्रिका

वन्दे मातरम्

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग • INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक पत्रिका

छब्बीसवाँ अंक

2022-23

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक	**श्रीमती यशोधरा रॉय चौधुरी** प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
परामर्शदातृ समिति	**श्री तन्मय जाना** , वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) **श्रीमती शैलजा खरे**, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (पेंशन) **श्री सुरेश कुमार आर. वी.**, उपमहालेखाकार (लेखा एवं वीएलसी) **श्री मुकुल जमलोकी**, उपमहालेखाकार (निधि) **श्री रेबती रंजन पोद्दार**, व. लेखा अधिकारी (प्रशा. हिंदी सेल)
संपादक	**श्री चन्दन कुमार बढ़ई**, हिन्दी अधिकारी (प्रशा. हिंदी सेल)
उपसंपादक	**श्री मनीष कुमार महतो**, वरिष्ठ अनुवादक
सहायक	**श्री जितेंद्र शर्मा**, सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) **श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह**, कनिष्ठ अनुवादक **श्री अमित कुमार**, वरिष्ठ लेखाकार **श्री अतुल कुमार**, लेखाकार
सहयोग	**श्री आशीष कुमार** , कनिष्ठ अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना जरुरी नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं |

यशोधरा रॉय चौधुरी
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700001

संदेश

कार्यालय की प्रतिष्ठित पत्रिका 'वंदे मातरम' ने विगत 25 अंकों की यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की है। पत्रिका की यह यात्रा आप सभी के भरपूर सहयोग और योगदान का ही परिणाम है। इसी क्रम में वंदे मातरम' का 26वां अंक आप सभी के सहयोग और परिश्रम को प्रतिबिंबित करता है। यहाँ से पत्रिका आत्मविश्वास और नई आकांक्षाओं के साथ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के निर्वहन हेतु तत्पर है। इस अंक की रचनाएँ समाज और संस्कृति के विविध आयामों को रोचक तरीके से प्रस्तुत करती हैं।

कार्यालय में राजभाषा हिंदी के अनुप्रयोग और व्यवहार को सतत बढ़ावा देने के क्रम में 'वंदे मातरम' का पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। आशा करती हूँ कि यह अंक हिंदी के अनुप्रयोग को आशानुकूल रूप से बढ़ाने में सक्षम होगा और आप सभी की उम्मीदों पर खरा उतरेगा।

इस अंक के संबंध में आप सभी की प्रतिक्रिया और सुझावों का हार्दिक स्वागत है, जिससे आगामी अंकों को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

सभी को शुभकामनाएँ।

यशोधरा रॉय चौधुरी

यशोधरा रॉय चौधुरी

तन्मय जाना
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

कार्यालय की पत्रिका 'वंदे मातरम' के 26वें अंक का प्रकाशन इसकी सफल यात्रा का साक्षी है। यह हर्ष का विषय है कि विगत वर्षों कि तरह इस वर्ष भी राजभाषा हिंदी के अनुपालन और कार्यालय के सभी कार्मिकों की रचनाधर्मिता को आकार देने की दिशा में 'वंदे मातरम' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

आशा करता हूँ कि आप सभी की बहुमूल्य सहभागिता से पत्रिका का कारवां यूं ही अनवरत चलता रहेगा और राजभाषा हिंदी के अनुपालन, प्रयोग व प्रसार में सहायक बनता रहेगा। पत्रिका की बेहतरी के लिए सुझावों और प्रतिक्रियाओं का हार्दिक स्वागत है।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक-मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

तन्मय जाना

चन्दन कुमार बढ़ई
(संपादक) हिन्दी अधिकारी

संपादकीय

हमारे कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका वंदे मातरम के 26वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए हर्ष का विषय है। हमारे कार्यालय के रचनाशील अधिकारी/कर्मचारियों के निरंतर सहयोग एवं हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा के कारण ही यह पत्रिका आकार लेने में सक्षम हुई है।

आज हम सभी हिन्दी की बढ़ती स्वीकार्यता एवं लोकप्रियता से अवगत है। हिन्दी भाषा को जानने-समझने एवं बोलने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। कार्यालयीन कार्यों में भी हिन्दी अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति दर्ज करा रही है। कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण की सहजता के कारण कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग व्यापक रूप में हो रहा है। अब हिन्दी अनुवाद की भाषा न रहकर ग क्षेत्रों में अवस्थित कार्यालयों में भी यह मूल पत्राचार की भाषा बन गयी है।

भाषा एवं साहित्य में अटूट संबंध होता है। हिन्दी साहित्य समृद्ध है तथा विश्व फलक पर भी अपनी पहचान बना रहा है। हाल ही में हिन्दी उपन्यास रेत समाधि को अंतर्राष्ट्रीय बुकर प्राइज़ से सम्मानित किया गया है। किसी भारतीय भाषा की किताब को मिलने वाला यह पहला बुकर पुरस्कार है। यह हिन्दी प्रेमियों के लिए गर्व का विषय है।

आशा है कि वंदे मातरम के पूर्व अंकों की भांति यह अंक भी आपको पसंद आयेगा।

आपके बहुमूल्य विचार एवं सुझावों का स्वागत है।

चन्दन कुमार बढ़ई

हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार,लेखापरीक्षा-II
पश्चिम बंगाल
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT-II , WEST BENGAL

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/96 — दिनांक:22/12/2022

27 DEC 2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन/हिन्दी सेल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

विषय: कार्यालय अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम" के 25वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम" के 25वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं, वो हैं- जहां गाड़ी मुड़ती है,तुम से आस, एक जेनेरेशन की आवाज-के.के. आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

Pr. A. G. (A&E) West Bengal
- 2 JAN 2023
Treasury Building, Kolkata-1

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ कॉम्प्लेक्स, डी.एफ ब्लॉक, सॉल्ट लेक, 5 वां तल, कोलकाता - 700064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता - 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52,Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या:हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/323
दिनांक: 05.12.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

विषय : विभागीय अर्धवार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के 25वें अंक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के 25वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पिछले अंक की भांति पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, यात्रा वृतांत आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाएं उत्तम स्तर की है। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र है। विशेष रूप से हम, पहल, अजीब दास्तां है ये..., ऐसा किसने सोचा था..., एक जेनरेशन की आवाज-के.के. इत्यादि रचनाएं काफी उत्साहपूर्ण है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। पत्रिका में वर्णित सभी तथ्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। एक बार पुनः हृदय से धन्यवाद।

भवदीय,

वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

आपके पत्र

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) PUNJAB & U.T., CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2700174, फैक्स 0172-2709110
क्रमांक- हिंदी कक्ष/पत्रिका प्रतिक्रि/1-10/2022-23/577
दिनांक- 05-12-2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता - 700001

विषय:-विभागीय पत्रिका "वन्दे मातरम्" के 25 वें अंक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "वन्दे मातरम्" का 25 वाँ अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक है।

श्री वन्दन कुमार बढ़ई की "जहाँ गली मुड़ती है", श्री तुहिन शुभ्र चटर्जी की "मन के नियंत्रण में योग की भूमिका", श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह की "एक बचपन था", श्री कुन्दन कुमार रविदास की "तुम से आना" एवं श्री सुमित कुमार दर्शवाल की "माँ की याद और अकेलापन" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

Government of India

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/130
दिनांक: 08-12-2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ प्रशासन एवं हिंदी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता-700 001

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "वंदे मातरम" के 25 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "वंदे मातरम" के 25 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर तिरंगे की छटा में रंगा राज्य की संस्कृति दर्शाता छायाचित्र बहुत ही सुंदर है, जो पत्रिका को आकर्षक एवं सुंदर बनाता है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत उत्तम है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

आपके पत्र

SPEED POST

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)असम ,बेलतला ,गुवाहाटी-781029
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), ASSAM, BELTOLA, GUWAHATI-29

सं. प्रशा./ले.प./हि.क./2-3/प.पा./2022-23/232 दिनांक: 05.12.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(प्रशासन हिंदी सेल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता - 700 001

विषय:- आपके द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 25 वें अंक के ई-प्रति की पावती।

महोदया/महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 25 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं [illegible] *'श्रम, एक-अपराध या', 'भक्ति की शक्ति', 'दिव्यांगता अभिशाप नहीं है', 'एक जेनरेशन की आवाज-के.के.'* विशेष रूप से सराहनीय रचनाएं हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

क.हि.कक्ष-2022-23/ 864

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं
पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का
कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER
AUDIT BOARD,BENGALURU-560001.

दिनांक - 5.12.2022

सेवा में,

वरि. लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक)
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता - 700001

विषय-प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी गृह ई - पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 25 वां अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	ये लड़कियां	यशोधरा रॉय चौधुरी	1
2.	लेह लद्दाख- एक स्वप्नराज्य	जयंत कुमार सील	2
3.	वैश्विक वायु गुणवत्ता और भारत की स्थिति	श्री जितेन्द्र शर्मा	5
4.	मिठास	चंदन कुमार	10
5.	कामयाबी की कश्मकश	मनीष कुमार महतो	14
6.	जोशीमठ - एक त्रासदी के इंतज़ार में	अतुल कुमार	21
7.	डिप्रेशन	प्रियंका संजीव सिंह	24
8.	मुफ्तखोर	आशीष कुमार	29
9.	गुरु तेगबहादुर हिन्द की चादर	श्रीमती सुष्मिता सरकार	34
10.	जिंदगी का साथ निभाते : साहिर	श्री रेवती रंजन पोद्दार	38
11.	सच तक	श्री अमित कुमार	42
12.	मृगतृष्णा	श्री गौरव कुमार	49
13.	गुरु-दक्षिणा	श्री आनंद कुमार पांडेय	56
14.	निर्णय (भाग-2)	श्री अनिल कुमार	57
15.	होली आई रे	श्रीमती सुनीता राउत	58
16.	कमरा नम्बर 13	आरती शर्मा	59

टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

ये लड़कियाँ

ये जो फिर उठाती हो अपने सिर
ये जो फिर होती हो आसमां पाकर दोहरी
सपने में देखती हो जहां भर की रौशनियाँ
पर यही गर खुलकर बोलना हो तो
शर्म आती है, धत!
आशा और आकांक्षाओं के साथ जीना
ठीक जैसी काँथा बीच उष्णता
पुरानी और फटी साड़ियों का काँथा
बातें बढ़ी जा रहीं हैं, अनर्गल
सुई में पिरोये जा रहीं हूँ धागे।
ये लो मैंने फैला दिए बेल-बूटे
अमरबेल सी फैल गई भंगिमाएँ और किस्सों के बहाने
ये फिर बुनावट दर बुनावट
बढ़ चला आकाशमणि कशीदा, तुम्हारे कारण ही, सुख!
बिछौना पसरा है किस्सों से आज
ऐसे में तनिक शांत रहा जाय
ये फिर व्याकुल चाहतों की हथेलियाँ
बढ़ा रहीं हैं ये लड़कियाँ
हासिल कर रहीं हैं खुद के सपने
तोड़कर अपने पिंजरे को।

यशोधरा रॉय चौधुरी, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) पश्चिम बंगाल, कोलकाता समकालीन साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। जीवन के विविध पहलुओं पर लिखी उनकी कविताएँ आधुनिक जीवनशैली और मध्यमवर्गीय नैतिक द्वंद्व की गहरी पड़ताल करती हैं। यह उनकी मूल बांग्ला कविता 'मेये गुलो' का हिंदी अनुवाद है।

श्रीमती यशोधरा राय चौधुरी
मूल बांग्ला कविता से अनुदित
अनुवादक : चन्दन कुमार बढ़ई

लेह लद्दाख-
एक स्वप्नराज्य

लंबे अरसे से कहीं घूम आने की योजना थी पर जा नहीं पा रहा था। दरअसल, मैंने सुन रखा था कि लेह लद्दाख जितना सुंदर है, उतना ही भयावह है। वहाँ के दुर्गम रास्तों में ऑक्सीजन के अभाव में सांस लेने में तकलीफ की संभावना है। क्योंकि इस इलाके की ऊंचाई लगभग 13,000 फुट है। फिर भी मन में साहस सँजो कर अगस्त माह के मध्यावधि में IRCTC ट्रैवल्स के साथ भ्रमण पर निकल पड़ें। वायुयान से हम कोलकाता से अहमदाबाद होकर दिल्ली पहुंचे। अहमदाबाद उतरकर हमारा परिचय हमारे अन्य सहयात्रियों से हुआ। लाउंज में हमने भोजन किया। अगले दिन सुबह हम विमान द्वारा पहाड़ों से घिरे लेह-लद्दाख की ओर रवाना हुए। लेह में हम जिस होटल में ठहरे थे उसका नाम है 'मंत्र'। इसका सौंदर्य वाकई मंत्र-मुग्ध करने वाला है, चहुंओर पहाड़, झरने, सुंदर फूलों के बाग, सेब और खूबानी के पेड़ों के सौंदर्य से मन पुल्कित हो जाता है।

उस दिन थोड़ा विश्राम कर अगले दिन हम लेह के दर्शनीय स्थलों को देखने निकल पड़ें। हमारे साथ हमारे टूर मैनेजर एवं गाइड भी थे। हमने कुछ समय प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण वैली में बिताया। फिर हम शांतिस्तूप, इलाइची मोनेस्ट्री, प्रतापपुर में सेना के एयरपोर्ट, लेक पैलेस, हॉल ऑफ फ़ेम आदि के दर्शन किए। हॉल ऑफ फेम में कारगिल युद्ध के विभिन्न स्मृतिचिन्ह और मॉडल रखे है। वहाँ हमने गार्ड ऑफ ऑनर देखा फिर मैगनेटिक हिल आदि। ये सब देखकर हम संध्या को वापस लौटे।

अगले दिन नुब्रा वैली देखने गाड़ी में सवार हुए। लेह से नुब्रा वैली की दूरी लगभग 170 किमी है। हमारे दल में कुल 20 लोग थे। इसलिए पूरी यात्रा के

दौरान हमारे लिए दो FORCE TRAVELLER की व्यवस्था की गयी थी। हंसी-मज़ाक और बात-चीत मे हमारी कष्टकर दीर्घयात्रा सरल हो गयी थी। हमारे रास्ते कहीं सपाट, कहीं तिरछे तो कहीं पथरीले और संकीर्ण थे। रास्ते के पास ही हमे दिखाई पड़ा काराकोरम पर्वत श्रेणी। कहीं-कहीं हमें छोटे-छोटे लाल-पीले बैंगनी रंग में फूलों से लदे पौधे भी दिखे। कहीं कही लंबे देवदारु पेड़ों की तरह कतार में पोपलर पेड़ दिखे। साथ ही, ग्लेशियर का पानी तेज गति से उतरना, पहाड़ी झरना का फेनिल शुद्ध जल का पहाड़ से उतरकर समतल में अनवरत बहे जाना हमें सुकून का अहसास करा रहा था। यह जल इतना स्वच्छ दिखाई पड़ता है कि इसके तल में हमें छोटे-छोटे पत्थर भी स्पष्ट दिख रहे थे। ये दृश्य देखते-देखते हम नुब्रा वैली के सहारा कैंप में पहुँच गए।

नुब्रा वैली का दीक्षित मठ, विशालकाय बुद्धमूर्ति यह मैत्रैयी बुद्ध या FUTURE BUDDHA के नाम से विख्यात है। भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय भारत में शांति की कामना करते हुए इस बुद्ध प्रतिमा का निर्माण खुले आकाश के नीचे करवाया गया। सुंदर रंगो से रंगी यह रंगीन बुद्धमूर्ति सचमुच असाधारण है।

इसके बाद हम तुरतुक गाँव पहुंचे। भारत-पाकिस्तान सीमा के पास बसे इस तुरतुक गाँव का प्राकृतिक सौन्दर्य अवर्णनीय है। पहाड़ों से घिरे इस गाँव से होकर श्योक नदी बहती है, जिससे यहाँ के लोगों को पीने का पानी तथा दैनंदिन कार्यों के लिए पानी मिलता है। प्रत्येक घर के पास कई तरह की सब्जियाँ उगाई गयी है। घर के पास ही खूबानी के पेड़ तथा कई प्रकार के रंग-बिरंगे फूलों की बहार है। नीला पहाड़ तथा सफ़ेद नीले आकाश की आभा से वह गाँव रंगीन हो जाता है। यहाँ के स्थानीय ग्रामीण अपनी आवश्यकता के अनुरूप खुद ही शाक-सब्जियाँ उगा लेते हैं। यहाँ के अधिकांश घर लकड़ी के बने हैं तथा इनका वास्तुशिल्प भी असाधारण है। वहाँ कुछेक घंटे रुक कर तथा लंच कर हम पुनः नुब्रा वैली की ओर रवाना हुए। रास्ते में हमें हंडार मरुभूमि मिला। वहाँ हमने दो कूबड़ वाले ऊंट की सफारी का आनंद लिया। तभी वहाँ तूफान शुरू हो गया। तूफान बहुत तेज नहीं था फिर भी हमारे कपड़े बालू से सन गए। इसका अनुभव रोमांचकरी था।

अगले दिन हम पैंगोंग पहुंचे। नुब्रा से पैंगोंग की दूरी लगभग 275 किमी है। रास्ते में हमने खारडूंगला पास (लगभग 18000 फूट ऊंचा) देखा। वहाँ हमे ऑक्सीजन की कमी महसूस हुई। पैंगोंग जाने का रास्ता संकीर्ण है। कहीं-कहीं रास्ते में घुटने भर श्योक नदी का पानी है, कहीं-कहीं रास्ता पथरीला है। कई बाधाओं को पार कर हम शाम को पैंगोंग झील के पास पहुंचे। इसका सौन्दर्य असाधारण है। वहाँ हिमालय से बहती ठंडी-ठंडी हवाओं को हमने महसूस किया। सूर्यास्त की लाल आभा से जब पहाड़ और झील का पानी लाल हो गया तो मानों

हमारी सारी थकान दूर हो गयी। उस दिव्य अनुभूति की व्याख्या नहीं हो सकती।

झील के किनारे एक सुसज्जित रिज़ॉर्ट में हमारे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। सुबह नाश्ते के बाद हम झील के समीप गए। झील का स्वच्छ जल तथा चारों ओर का मनोरम परिवेश सचमुच मन को तृप्त करने वाला था। वहाँ से हमारी यात्रा लेह के लिए आरंभ हुई। अब हमें लौटना था। रास्ते में हमें बर्फ से ढंका चांगला पास दिखा। वहाँ कुछ समय बिताकर हम लेह के 'मंत्र' होटल में वापस आ गए।

सच की कहते है कि लद्दाख का प्राकृतिक सौन्दर्य तथा दर्शनीय स्थलों को न देखे तो इसकी सुंदरता पर विश्वास करना कठिन है। यदि इच्छा शक्ति प्रबल हो तो आप भी लेह लद्दाख की यात्रा के लिए निकल पड़े तथा वहाँ के पहाड़ों का अद्भुत रूप तथा झील के असाधारण प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद लें।

जयंत कुमार सील
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

वैश्विक वायु गुणवत्ता और भारत की स्थिति

विश्व स्वास्थ्य संगठन के वैश्विक वायु गुणवत्ता दिशा-निर्देश (एक्यूजी- Air Quality Guidelines) स्विट्ज़रलैंड में स्थित संगठन, IQAir द्वारा प्रकाशित किया जाता है। यह विश्व स्तर पर प्रकाशित होता है। 2020 में, इसने 106 देशों में PM (पार्टिकुलेट मैटर) 2.5 औसत का आकलन किया। संगठन वास्तविक समय में जमीनी स्तर के निगरानी स्टेशनों द्वारा दुनिया भर में PM 2.5 स्तर की तुलना करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के नए वैश्विक वायु गुणवत्ता दिशा-निर्देश मानव स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण के कारण होने वाले नुकसान के स्पष्ट साक्ष्य प्रदान करते हैं। दिशा-निर्देश प्रमुख वायु प्रदूषकों, जिनमें से कुछ जलवायु परिवर्तन में भी योगदान करते है, के स्तर को कम करके, आबादी के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए नए वायु गुणवत्ता स्तरों की सिफारिश करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के पिछले वैश्विक अपडेट के बाद से इस बात के प्रमाण में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है कि वायु प्रदूषण स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं को कैसे प्रभावित करता है। उस कारण से और संचित साक्ष्य की एक व्यवस्थित समीक्षा के बाद, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने लगभग सभी ए.क्यू.जी. स्तरों को यह चेतावनी देते हुए नीचे की ओर समायोजित कर दिया है कि नए वायु गुणवत्ता दिशा-निर्देश स्तरों से अधिक वायु प्रदूषण स्तर स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण जोखिमों से जुड़ा

है, साथ ही इन दिशा-निर्देश स्तरों का पालन करके लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है।

एक अनुमान के अनुसार हर वर्ष वायु प्रदूषण के सम्पर्क में आने से समय से पहले ही 70 लाख से अधिक मौते होती है। वायु प्रदषण से बच्चों में फेफडों की वृद्धि धीमी हो जाती है और उनके कार्य करने की क्षमता भी कम हो जाती है। वे श्वसन संक्रमण और श्वांस के रोग के भी शिकार हो जाते हैं। वयस्कों में इस्केमिक (Ischaemic) ह्रदय रोग और ह्रदय आघात बाहरी वायु प्रदूषण के कारण समय से पहले मौत के सबसे आम कारण हैं। वायु प्रदूषण जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ मानव स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़े पर्यावरणीय खतरों में से एक है। वायु गुणवत्ता में सुधार से जलवायु परिवर्तन के कुप्रभावों को कम करने के प्रयासों में वृद्धि हो सकती है। जबकि ग्रीन गैसों और कार्बन कणों के उत्सर्जन को कम करने से वायु गुणवत्ता में सुधार होगा। इन दिशा-निर्देश स्तरों को प्राप्त करने का प्रयास करके देश स्वास्थ्य की रक्षा करने के साथ-साथ वैश्विक जलवायु परिवर्तन को कम करने वाले दोनों लक्ष्यों को प्राप्त कर सकने में सफल होंगे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के नए दिशा-निर्देश 6 प्रदूषकों के लिए वायु गुणवत्ता के स्तर की सलाह देते हैं। वायु को प्रदूषित करने वाले पारम्परिक प्रदूषक - पार्टिकुलेट मैटर (PM), ओजोन (O), नाइट्रोजन डाइ- ऑक्साइड (NO), सल्फर डाइऑक्साइड (SO2) और कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) हैं।

10 और 2.5 माइक्रोन व्यास (क्रमश: पीएम10 और पीएम 2.5) के बराबर या उससे छोटे पार्टिकुलेट मैटर से जुड़े स्वास्थ्य जोखिम विशेष रूप से सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रासंगिकता के हैं। पीएम 2.5 और पीएम 10 दोनों फेफड़ों में गहराई से प्रवेश करने में सक्षम हैं, लेकिन पीएम 2.5 रक्तप्रवाह में भी प्रवेश कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मुख्य रूप से ह्रदय और श्वसन सम्बन्धी प्रभाव होते हैं, और अन्य अंगों को भी प्रभावित करते हैं। पीएम मुख्य रूप से परिवहन, ऊर्जा, घरों, उद्योग और कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों में ईंधन के दहन से उत्पन्न होता है।

वायु प्रदूषण सभी देशो में स्वास्थ्य के लिए खतरा है, लेकिन यह निम्न और मध्यम आय वाले देशों में लोगों को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयसस ने कहा "विश्व स्वास्थ्य संगठन के नए वायु गुणवत्ता दिशा-निर्देश हवा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक साक्ष्य-आधारित और व्यावहारिक उपकरण हैं, जिस पर सारा जीवन निर्भर करता है। मैं सभी देशों और उन सभी लोगों से आग्रह करता हूँ जो हमारे पर्यावरण की रक्षा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं और दुःख को कम करने और जीवन बचाने के लिए इसका इस्तेमाल करें।"

भारत के सन्दर्भ में विश्व स्वास्थ्य संगठन के नए मानक

पीएम2.5 के लिए 24 घंटे की औसत मात्रा 25 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर से घटाकर 15 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर कर दी गई है। नाइट्रोजन डाइऑक्साइड की मात्रा को वार्षिक औसत के रूप में 40 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर से घटाकर 10 माइक्रोग्राम प्रति अधिक क्यूबिक मीटर कर दिया गया है। भारत में, 24 घंटे के औसत के लिए पीएम2.5 दिशा निर्देश 40 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर और 60 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर वार्षिक औसत के रूप में है। इसी तरह, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड के लिए, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के राष्ट्रीय परिवेश वायु गुणवत्ता मानकों ने वार्षिक औसत के रूप में 40 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर और 24 घंटे के औसत के रूप में 80 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर निर्धारित किया है।

नए दिशा-निर्देश हाल के वर्षों में कई वैज्ञानिक अध्ययनों पर आधारित हैं जिन्होंने सुझाव दिया गया है कि वायु प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिए पहले की तुलना में कहीं अधिक हानिकारक है। नए वायु

गुणवत्ता दिशा-निर्देशों का अर्थ है कि लगभग पूरे भारत को वर्ष के अधिकांश समय के लिए प्रदूषित क्षेत्र माना जाएगा, लेकिन इस विषम स्थिति वाला भारत अकेला देश नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के नए मानकों के सन्दर्भ में, दुनिया की 90 प्रतिशत से अधिक आबादी उन क्षेत्रों में रहती है, जो प्रदूषण मानकों को भी पूरा नहीं करते हैं। मानदंडों को अब और भी सख्त किए जाने के साथ, यह अनुपात और बढ़ जाएगा, लेकिन दक्षिण एशिया, और विशेष रूप से भारत दुनिया के सबसे प्रदूषित क्षेत्रों में से एक बना हुआ है, जहाँ प्रदूषण स्तर अनुशंसित स्तरों से कई गुना अधिक है। उदाहरण के लिए, ग्रीनपीस के एक अध्ययन में पाया गया कि 2020 में दिल्ली में पीएम2.5 की औसत सांद्रता अनुशंसित स्तरों से लगभग 17 गुना अधिक थी। मुम्बई में प्रदूषण का स्तर आठ गुना अधिक था, कोलकाता में, नौ गुना अधिक और चेन्नई में, पाँच गुना अधिक।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानदंडों की तुलना में भारत के अपने राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता मानक बहुत अधिक उदार हैं। उदाहरण के लिए, 24 घंटे

की अवधि में अनुशंसित पीएम2.5 सांद्रता 60 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर है, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा-निर्देशों में 25 माइक्रोग्राम की सलाह दी गई है, लेकिन इन निचले मानकों को भी शायद ही पूरा किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में, सरकार 2017 के आधार पर कुछ शहरों में 2024 तक वायु प्रदूषण को 20 से 30 प्रतिशत तक कम करने की योजना पर काम कर रही है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानदंड किसी भी देश के लिए बाध्यकारी नहीं हैं। ये केवल मानव स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित माने जाने वाले अनुशंसित मानदंड हैं, जैसा कि वैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा मूल्यांकन किया गया है, लेकिन खराब वायु गुणवत्ता अनुकूल पर्यटन और निवेश गंतव्य के रूप में किसी देश की अंतर्राष्ट्रीय छवि को प्रभावित करती है।

वायु प्रदूषण के जोखिम में असमानता दुनिया भर में बढ़ रही है, विशेष रूप से निम्न और मध्यम आय वाले देशों मे बड़े पैमाने पर शहरीकरण और आर्थिक विकास के कारण वायु प्रदूषण के बढ़ते स्तर का अनुभव हो रहा है, जो काफी हद तक जीवाश्म ईंधन के जलने पर निर्भर है। स्वच्छ हवा एक मौलिक मानव अधिकार और स्वस्थ और उत्पादक समाज के लिए एक आवश्यक शर्त होनी चाहिए। अकेले परिवेशी वायु प्रदूषण के वैश्विक आकलन से पता चलता है कि निम्न और मध्यम आय वाले देशों में सबसे अधिक बीमारी के बोझ को झेलना पड़ा है। जितना अधिक वे वायु प्रदूषण के सम्पर्क में आते हैं, स्वास्थ्य पर उतना ही अधिक घातक प्रभाव पड़ता है, विशेष रूप से पुरानी स्थितियों वाले व्यक्तियों (जैसे श्वास रोग, पुरानी प्रतिरोधी फुफ्फुसीय रोग और हृदय रोग) के साथ-साथ वृद्ध लोगों, बच्चों और गर्भवती महिलाओं पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव।

2019 में, वैश्विक आबादी का 90% से अधिक उन क्षेत्रों में रहता था जहाँ पीएम2.5 सांद्रता वायु गुणवत्ता दिशा-निर्देश से अधिक थी। वायु गुणवत्ता में मजबूत नीति- चालित सुधार वाले देशों में अक्सर वायु प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी देखी गई है।

अनुशंसित वायु गुणवत्ता दिशा-निर्देश स्तरों को प्राप्त करने का मार्ग:-

दिशा-निर्देश का लक्ष्य सभी देशों के लिए अनुशंसित वायु गुणवत्ता स्तर प्राप्त करना है। यह जानते हुए कि उच्च वायु प्रदूषण के स्तर से जूझ रहे कई देशों और क्षेत्रों के लिए यह एक कठिन काम होगा, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वायु गुणवत्ता में चरणबद्ध सुधार की सुविधा के लिए अंतरिम लक्ष्य प्रस्तावित किए हैं और इस प्रकार जनसंख्या के लिए क्रमिक, लेकिन सार्थक, स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने का कार्य प्रशस्त किया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किए गए एक त्वरित परिदृश्य विश्लेषण के अनुसार, यदि वर्तमान

वायु प्रदूषण के स्तर को अद्यतन दिशा-निर्देशों में प्रस्तावित स्तर तक कम कर दिया जाए, तो दुनिया में पीएम2.5 से सम्बन्धित लगभग 80% मौतों से बचा जा सकता है। साथ ही, अंतरिम लक्ष्यों की उपलब्धि के परिणामस्वरूप बीमारी का बोझ कम होगा, जिसका सबसे बड़ा लाभ सूक्ष्म कणों (पीएम2.5) और बड़ी आबादी की उच्च सांद्रता वाले देशों में देखा जाएगा।

जहाँ तक भारत का प्रश्न है, तो वायु प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए अब तक चलाई गई परियोजनाओं के परिणाम कोई बहुत उत्साहवर्धक तो नहीं रहे हैं। इन सभी परियोजनाओं पर निरंतर दबाव बनाए रखने पर भी सुधार धीमा रहने की सम्भावना है। यह अहसास भारत के राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम में भी परिलक्षित होता है। चयनित शहरों के लिए निर्धारित लक्ष्य काफी मामूली हैं और इन्हें हासिल करने में कई वर्ष लगेंगे, लेकिन कई क्षेत्र ऐसे जो कम समय के भीतर सराहनीय लाभ प्रदान कर सकते हैं। दुर्भाग्य से, इन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है, भले ही इन्हें लागू करना आसान और लागत प्रभावी हो। पूरे देश में बहुत सारे निर्माण हो रहे हैं-घर, सड़कें, वाणिज्यिक केन्द्र, हवाई अड्डे और यह कुछ दशकों तक जारी रहने की सम्भावना है।

भारत में आज भी इस निर्माण को बहुत ही अशुद्ध तरीके से किया जाता है। निर्माण स्थल को ढका या अलग नहीं किया जाता है, निर्माण सामग्री या मलबे को खुले में रखा जाता है, और खुले ट्रकों में ले जाया जाता है। लगभग सभी निर्माण स्थल धूल के पात्र बने हुए हैं।

भारत में सड़कें बुनियादी निर्माण स्थलों के अनुरूप नहीं हैं। सड़कों के कोनों को ठीक से पक्का नहीं किया गया है, जिससे बहुत सारे हानिकारक कण निकलते हैं। फुटपाथ और सड़क के डिवाइडर धूल के प्रमुख स्रोत है। स्थानीय नगर निकाय चाहे तो इन्हें काफी कम लागत पर ठीक किया जा सकता है, लेकिन ऐसा हो नहीं रहा।

इन निर्माण स्थलों से प्रतिदिन प्रतिपल बड़ी मात्रा में धूल उड़ती रहती है जिससे वायु में पीएम 2.5 और पीएम10 की सांद्रता बढ़ती रहती है।

श्री जितेन्द्र शर्मा
(सहायक लेखा अधिकारी, तदर्थ)

मिठास

पांच वर्षीय भोला का विलाप स्वर क्रमशः क्षीण होते-होते एक ऐसी स्थिति पर आ गया था, जब वह घड़ी भर के अंतराल पर एं....एं.....करता। फिर चुप हो जाता। उसके दोनों गालों पर लुढ़के आंसुओं की रेखाएँ लगभग सूख चुकी थी। बाल बेतरतीब थे, धूल अटे। कपड़े भी धूल धूसरित। घर के पिछवाड़े घने लीची के पेड़ के नीचे जमीन पर दोनों पैर पसारे बेढंगा बैठा था।

रोने की शुरुआत के साथ ही जमीन पर लोटकर बिलबिलाने की उसकी आदत थी। फिर काफी मान मनौव्वल के बाद ही चुप होता था। अब उसके विलाप स्वर क्षीण पड़ गए थे। वह धूल सने दोनों पैर फैलाए कुछ अंतराल पर एं.... एं... कर रहा था। उसके रोने का यह अवसान था।

भोला की निगाहें उसके खपरैल मकान के पिछले दीवार पर टिकी थी। उसने देखा कि दीवार की एक दरार में नन्हीं चीटियों की एक लंबी कतार समा रही है।

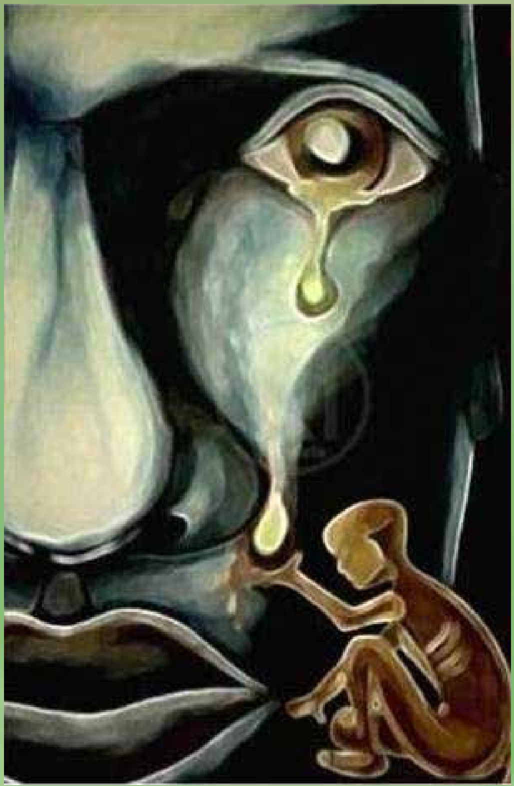

चीटियां मुंह में एक सफेद कण दबाए तेजी से दरार में प्रवेश कर रही हैं। उसने मां से सुन रखा था कि ये कण चीटियों के अंडे हैं, और जब वर्षा होने वाली हो तो वे अंडों को सुरक्षित स्थान पर ले जाती हैं।

न जाने कैसे चीटियों को बारिश का पूर्वानुमान हो जाता है। उसने आसमान की ओर देखा लीची के पत्तों के झुरमुट से झांकती सूरज की तेज किरणों से भोला की आंखें मिचमिचाने लगीं।

उधर पूर्वाकाश में फैले क्षितिज में बर्फ के पहाड़ों की तरह सफेद बादल तैर रहे थे। उसने सुना था कि बादल काले हो तो बारिश जरूर होती है। आज तो बादल सफेद दिख रहे हैं। बारिश तो होगी नहीं। क्या जरूरत थी चीटियों को अंडे ढोने होने की!

उसे अचानक न जाने क्या सूझी, उसने पास पड़ी एक सूखी टहनी को उठा लिया और उससे दीवार पर रेंगती चीटियों के कतार को तितर-बितर कर दिया।

चीटियों में मानों कोहराम मच गया। सभी चीटियां बिलबिला कर

इधर-उधर भागने लगीं। कतार टूट गई।

तभी अचानक मां न जाने किस कारण पिछवाड़े आई और भोला की ओर एक नजर देखकर तेजी से अंदर चली गई। भोला को थोड़ी देर पहले पड़ी मां की झिड़की और थप्पड़ की याद आई। वह टहनी को एक ओर फेंककर पुनः धप्प से जमीन पर बैठ गया।

माँ पिछवाड़े आई, उसे देखा और बेरुखी से अंदर चली गई। उसे जी में आया कि वह फिर से जार जार रोना शुरू कर दे और जमीन पर लोटने लगे। पर अब चाह कर भी उसे रोना नहीं आ रहा था।

क्या गुनाह किया था उसने जो उसे मार पड़ी है! एक बिस्किट ही तो उठाकर खा लिया था। आज रानी दीदी को देखने लड़के वाले आने वाले हैं। माँ सुबह से घर की साफ सफाई में लगी है। मां ने दीदी को भेजकर चाय पत्ती, चीनी, दूध और बिस्किट मंगाए थे। उसने बस वहाँ से एक बिस्किट उठाकर मुंह में डाला था कि बस मां बिफर पड़ी।एक तमाचा रसीद दिया "अभी अभी तो आम रोटी भकोसा है। कितनी भूख लगती है तुझे! बिस्किट खा गया।अरे ये तो मेहमानों के लिए आया है। भुक्खड़ कहीं का! ले सब बिस्कुट खा जा!

तब से न जाने कितनी देर तक मां बड़बड़ करती रही, "सुबह से एक अन्न तक नहीं खाया। सुबह चार बजे जगी हूँ, तब से खटी ही जा रही हूँ। सुनरी की माँ के पैर पड़ आई हूँ। अभी कितना काम बाकी पड़ा है। तेरा बाप तो किसी काम का नहीं। घंटे भर पहले गया था मिठाई लाने, अभी तक नहीं लौटने का नाम नहीं।"

"मैं कुछ करूँ?" रानी ने सहमते हुए मां से पूछा।

" तू अपने लिए सुनरी की माँ से एक अच्छी साड़ी मांग ला। मैंने उससे कह दिया है। देर मत करना। जल्दी जा।"

रानी को सुनरी की माँ से साड़ी माँगने जाना अजीब लग रहा था। मां और सुनरी की मां में कुछ दिन पहले ही कहा सुनी हो गई थी। मां ने कहा था, "मेरे पैर कीड़े पड़े जो तेरे घर कदम रखूँ।"

सुनरी की माँ ने कहा, "मेरी आंखें फूटे जो कभी तू नजर आए । रानी ने जब कहा था 'मौसी तुम चुप हो जाओ तो माँ भी चुप हो जाएगी।' तब वह ललकारते हुए बोली "खबरदार जो इस चुड़ैल को मौसी कहा।

रानी को को याद है कि चुड़ैल कहने पर चुनरी की माँ आग बबूला हो गई थी। गांव भर के लोग दबी जुबान कहते हैं कि वह जादू टोना सीखती है। तंत्र साधना करती है। डायन विद्या सीख जाए तो वह मुर्दों से भी बात कर सकेगी। किसी को भी 'बान' मारकर बीमार कर सकेगी।

रानी को इन बातों में विश्वास नहीं था। उसे सुनरी की माँ अच्छी लगती थी। जब कोई मुसीबत आई तो वही सबसे पहले मदद करने आई।

भोला ने देखा कि उसका बाप मिठाई का थैला लिए अपनी साइकिल से उतर रहा है। बाप की नजर

पड़ते ही वह जमीन से उठ बैठा और अपनी पैंट से धूल झाड़ने लगा। उसका बाप उसे घूरते हुए मिठाई

का थैला लिए तेजी से घर में घुसा।

"वे लोग आ रहे हैं।" घर में घुसते ही वह हाँफते हुए बोला। "कुल चार लोग हैं। लड़के के पिता जी, मामा चचेरा भाई और बैजनाथ।

"कौन बैजनाथ? ब्लॉक ऑफिस वाला? रानी की माँ ने पूछा।

"हाँ, वही।"

"अरे वो क्यों आ रहा है? हमारे घर में घुसेगा! जात धर्म कुछ बचा है कि नहीं!"

"लड़के के बाप से बैजनाथ की जान पहचान है। इसलिए साथ आ रहा है। आजकल दस जात के लोग इक्कठे रहते हैं और साथ में खाते पीते भी हैं।"

रानी की मां बोली, "आप जाकर राघोजी को जल्दी बुलाइए। आप ज्यादा बातें मत करना। अंड संड बकते रहते हैं। राघोजी बात करेंगे।"।"

मेहमान आ गए हैं। बरामदे के कोने में पड़ी चारपाई पर नई शतरंजी बिछाई गई थी। चारपाई पर मेहमान विराजे थे। राघोजी पास कुर्सी पर बैठे मेहमानों से गांव जवार की बातें कर उन्हें अपने प्रभाव में ले रहे थे।

रानी का बाप अपने ही घर में ही सहमा सा कोने में दुबका था। रानी की माँ और सुनरी की माँ मेहमानों को प्लेट में मिठाई नमकीन परोस रहीं थी। पड़ोस की कई औरतें इकट्ठी एक ओर खड़ी थी। भोला पैंट की धूल झाड़कर दूर खड़े होकर एकटक देख रहा था।

प्लेट में सजे सफेद रसगुल्ले, गुलाब जामुन, नमकीन और समोसे! उसकी जीभ तर हो आई। थोड़ी देर पहले पड़ी मार अभी भी ताजी थी। एक बिस्किट के लिए तमाचा पड़ा था। गलती से अगर उसने एक मिठाई खा लिया होता तो शायद माँ ने उसका भुर्ता बना दिया होता।

भोला को पता है कि उसका बाप गिनकर मिठाई लाया होगा, फाजिल एक भी नहीं।

लड़के वालों के समक्ष रानी को बिठाया गया। सुनरी की माँ ने वाकई सुंदर सी साड़ी दी है पहनने को। रानी को स्नो, पाउडर भी उसने लगा दिया है।

भोला थोड़ी ओट में चला गया। कहीं किसी मेहमान की नजर उस पर न पड़ जाए। मेहमानों ने अपने हिस्सों की मिठाइयाँ खाकर प्लेट एक ओर धर दिए थे।

कुछ देर में लड़के वाले चलने को हुए। राघो

जी उनके साथ चलते हुए अभी तक उनसे बतिया रहे थे। रानी का बाप गंभीर मुद्रा में उनके पीछे पीछे चल रहा था।

रानी की माँ कह रही थी, "सुनती हो सुनरी की माँ, लड़के वालों की रानी पसंद आ गई है। लड़के को दिखाने के लिए रानी की एक फोटो मांग रहे थे। आज चलो रानी को स्टूडियो लिए चलते हैं।"

सुनरी की माँ से वह इतनी चहक-चहककर बातें कर रही थी कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि तीन रोज पहले यही दो औरतें एक दूसरे के बाल नोचने को उतारू थी।

रानी की माँ स्टूडियो जाने से पहले जल्दी से जूठे प्लेट को नलकूप के पास रख आई। सुनरी की माँ से कहने लगी, "बैजनाथ भी आया था। अब उससे तो कहा नहीं जा सकता अपना प्लेट धोकर जाओ। अब इनका प्लेट भी मुझे धोना पड़ेगा। यह प्लेट ऐसे ही पड़ा रहे। नहाने से पहले इसे हाथ लगाऊँगी।"

इधर भोला की आँखें चमक उठीं। बैजनाथ के प्लेट में एक गुलाब जामुन चमक रहा था! बैजनाथ गुलाब जामुन नहीं खाता! खाए न खाए मेरी बला से!

रानी का बाप राघोजी के पीछे पीछे गया था। माँ, सुनरी की माँ और रानी चौक पर स्टूडियो गई थी। घर में था भोला और गुलाब जामुन!

भोला तेजी से प्लेट के पास गया। इधर उधर देखा। कोई नहीं था। उसने झट से गुलाब जामुन उठाया और मुँह में डाल दिया।

गुलाब जामुन देर तक उसके मुँह में घुलता रहा। उसकी मिठास उसके शरीर के सभी शिराओं में दौड़ने लगीं। चाशनी से उसका मन भींगने लगा।

घर के पिछवाड़े लीची के पेड़ तले वह खड़ा था। तृप्त। आसमान को घेरने धूसर बादल दौड़े चले आ रहे थे। आज शाम को जरूर बारिश होगी। लगता है चींटियों का अनुमान ठीक ही था। भोला ने एक नजर दीवार के दरार पर डाली। चींटियों ने अपनी कतार सीधी कर ली थी। उसने पास पड़ी सूखी टहनी को फिर उठा लिया। चींटी की कतार उसे भली लग रही थी। कुछ पल वह चींटियों को दरार में समाते हुए देखता रहा फिर उसने टहनी को उछालकर दूर फेंक दिया।

चंदन कुमार
हिंदी अधिकारी

कामयाबी की कश्मकश

किसी गाँव में एक किसान के दो बेटे थे। बड़े बेटे का नाम था – अमित और छोटे बेटे का नाम था – सुमित। किसान बहुत गरीब था लेकिन उसका बड़ा बेटा अमित पढ़ने-लिखने में बहुत ही तेज था। किसान गाँव के एक अमीर जमींदार के यहाँ काम करता था और अपनी मेहनत से किसी तरह दो वक्त की रोटी का जुगाड़ कर अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। धीरे-धीरे स्थिति और भी गंभीर होती गई। जब उसके घर में खाने के लाले पड़ने लगे तो अमित से घर की हालात देखी नहीं गई और वह पढ़ाई-लिखाई बीच में ही छोड़ कर पास सटे शहर में मजदूरी करने चला गया। तब जाकर घर की स्थिति थोड़ी बहुत सुधरी।

समय का पहिया चलता गया। अमित की शादी हो गई और उसका जीवन खुशी-खुशी बीतने लगा। लेकिन अमित के दिल में पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने की कसक लगी रही। समय बीतता गया, अमित को दो लड़कें और एक लड़की हुई। अमित ने उसी दिन यह निश्चय कर लिया था जो कष्ट उसने झेला है, वह कष्ट वह अपनी संतानों को नहीं होने देगा। इसी निश्चय के साथ वह उनकी पढ़ाई-लिखाई पर अधिक ध्यान देने लगा।

एक दिन इस फलते-फूलते परिवार पर किसी की नजर लग गयी। अमित के छोटे भाई सुमित की अचानक एक दुर्घटना में मौत हो गई, मानों अमित के सिर पर भगवान ने बज्र का प्रहार कर दिया हो। अमित, सुमित के परिवार को बीच मझधार में डूबने के लिए नहीं छोड़ सकता था। सुमित के भी छोटे-छोटे तीन बच्चे थे, उनके देखभाल की जिम्मेदारी भी अमित के कमजोर कंधों पर आ पड़ी और वह उनका भी पालन-पोषण अपने ही बच्चों के साथ करने लगा। परिवार एक बार फिर से नाजुक स्थिति से गुजरने लगा। अमित से दो-दो परिवार का बोझ नहीं उठाया जा रहा था और ऊपर से महंगाई ने भी कमर तोड़कर रख दी थी। अमित का बड़ा लड़का सोनू अब कॉलेज में पढ़ रहा था। छोटे बच्चे भी स्कूल में पढ़ रहे थे। बच्चों की जरूरतें पूरी करते-करते और उनके पढ़ाई का खर्च ढोने में अमित की

हालत खराब हो रही थी। उसकी हिम्मत कभी-कभी पछाड़ खा जाती थी, लेकिन जब उसे अपनी पुरानी यादें ताजा होतीं तब उसकी ईच्छाशक्ति तीव्र हो उठती और वह सोचता – "भले ही मैं मर-मिट जाऊँ, लेकिन बच्चों की पढ़ाई को नहीं रूकनी चाहिए।" फिर वह अपने लक्ष्य की ओर तत्परता से आगे बढ़ता। उसकी परिस्थिति इतनी बदत्तर हो गई कि उसे पढ़ाई और अन्य जरूरतों की पूर्ति करने के लिए गाँव के महाजनों से सूद पर पैसे उधार लेने पड़ गए। अमित और ज्यादा मेहनत कर रहा था, लेकिन उसकी सारी मेहनत इस विकट समस्या के सामने मात खा जाती थी। धीरे-धीरे महाजन का सूद भी बढ़ता गया। सोनू भी अपने पिता की तरह पढ़ने में बहुत ही मेधावी था। वह प्रथम कक्षा से ही अपने स्कूल-कॉलेज में हमेशा अव्वल आता था।

जब सोनू को बाहर रखने तथा उसे पढ़ाने में पैसे की समस्या गहराती गई, तब जाकर अमित ने सोनू को भी अपने पास ही बुला लिया जहाँ वह मजदूरी करता था ताकि इससे सोनू के अलग से रहने के लिए कमरे का किराया और खाने पर खर्च कम हो जाए। फिर भी अमित को मिलने वाली मजदूरी उसकी सारी समस्याओं के आगे कम थी जिससे उसकी हिम्मत टूट रही थी। एक दिन उसने अपने लड़के (सोनू) को ट्यूशन पढ़ाने की सलाह दी, सोचा था - इससे थोड़ी-सी राहत मिलेगी, वास्तव में राहत मिली भी। सोनू ट्यूशन पढ़ाने लगा और स्वयं के पढ़ाई का खर्च उठाकर मन से पढ़ने लगा। साथ ही कभी-कभी भाई-बहनों की कुछ एक छोटी-छोटी जरूरतों की पूर्ति भी करने लगा। आपस में भाई-बहनों का प्रेम देखकर अमित को बहुत खुशी होती थी।

जब भी सोनू अपने पिता को अत्यधिक मेहनत करते हुए देखता तो उसे बहुत बुरा लगता था। घर की हालात को देखकर सोनू ने अपना पहला लक्ष्य बना लिया था कि उसे सर्वप्रथम कोई भी एक नौकरी चाहिए। वह तरह-तरह की वैकेन्सी निकलने पर फार्म भरा करता था, परीक्षा भी देता था, लेकिन

हर बार वह असफल हो जाता था।

जब भी सोनू अपने गाँव आता था, गाँव के महाजन मधुमक्खियों की तरह अपने कर्ज वसूलने

के लिए उसके पीछे-पीछे आ जाते थे। सोनू कभी तो खाली हाथ या कभी-कभी थोड़ा बहुत पैसा लेकर आता था जो कि घर-खर्च या भाई-बहनों की कुछ एक छोटी-छोटी जरूरतों के लिए होता था। महाजन उसे और उसकी माँ को बहुत जली-कटी सुनाते थें। इधर गाँव वाले भी अमित तथा सोनू के बारे में बहुत व्यंग्यात्मक बातें करते थे कि बाप को कर्ज में डूबा देखकर भी नौकरी के पीछे पड़ा हुआ है, इससे उबरने के लिए बाप के साथ मजदूरी नहीं करता और वे अमित के बारे में कहते कि वह तो पगला गया है, बेटा को ऐसे पढ़ा रहा है कि वह "दारोगा" ही बन जाएगा। ये सब देखकर सोनू को बहुत ग्लानि होती थी कि उसके चलते पिताजी को क्या-क्या कष्ट झेलने पड़ रहे हैं। यहाँ तक कि एक दिन एक आदमी ने सोनू को निकम्मा, नालायक आदि शब्दभेदी वाणों से चोटिल किया । इस बात ने सोनू को झकझोर कर रख दिया। वह माँ से बोला - माँ, अब मैं शहर जाकर पैसा कमाना चाहता हूँ। मुझसे घर की हालत देखी नहीं जाती। सोनू की माँ बहुत ही समझदार, हिम्मत वाली और धैर्यशील औरत थी। वैसे भी माँ का हृदय बहुत ही विशाल होता है। वह सोनू को समझाया करती थी कि सब दिन एक जैसा नहीं रहता है, ईश्वर की कृपा से हमारा भी अच्छा समय आएगा, जब तुम्हें कहीं नौकरी मिल जायेगी, तब सब कुछ ठीक हो जायेगा।

अमित को भी अपने परिवार से दूर रहना अच्छा नहीं लगता था, लेकिन ऐसी परिस्थिति के सामने तो हर कोई हार जाता है। उसने महाजन के डर से गाँव आना तक छोड़ दिया था, इससे उसकी बेचैनी और बढ़ गई। एक दिन जब सोनू को रहा नहीं गया तो जिद करके अपने पिता के साथ मजदूरी करने चल दिया। शाम को सोनू के हाथ में फफोले पड़ गए और वह अकेले में रोने लगा, सोचा हमसे तो मजदूरी भी नहीं हो पा रही है और नौकरी भी नहीं मिल रही है। वह और भी कड़ी मेहनत करने लगा, रात और दिन उसके लिए एक समान हो गए। अमित की कड़ी मेहनत के आगे समय को भी शायद हार माननी पड़ गई । सोनू को एक अच्छे विभाग में सूबेदार की नौकरी मिल गयी। अब पूरा परिवार खुशी के मारे गदगद हो गया मानों डूबते को तिनके का सहारा मिल गया जिसके सहारे वे अपनी नैय्या पार कर पाएंगे और गाँव वालों के मुँह में भी तालें लग गए। अब बोले भी तो क्या बोले?

सोनू ने सबसे पहले अपने पिता जी को आराम दिया और उन्हें मजदूरी करने से मना कर दिया । अब गाँव के महाजन के व्यवहार में भी कुछ नरमी आ गई। लेकिन एक व्यक्ति के कमाई से घर चलाना मुश्किल था, उससे किसी तरह घर चल रहा था । अब तो उसका छोटा भाई भी कॉलेज में पढ़ने लगा था, उसका खर्च भी अब सोनू ही देता था। फिर भी सोनू ने कभी हिम्मत नहीं हारी । किसी तरह से भाईयों को भी पढ़ाता था और अपने घर की जरूरतों की पूर्ति भी करता था। अब तक सोनू की

भी शादी हो गई थी तथा उसे दो लड़के भी हुए। सोनू अपने परिवार को गाँव में नहीं रखा क्योंकि वह अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा देना चाहता था और एक कामयाब आदमी बनाना चाहता था।

इधर सोनू का छोटा भाई मोनू भी मन लगाकर पढ़ रहा था। सोनू के पास कुछ भी पैसा नहीं बचता था, सारा का सारा पैसा मोनू की पढ़ाई, घर की जरूरतों, महाजन को चुकौती देने में तथा स्वयं में खर्च हो जाता था। अब तक सोनू को नौकरी करते हुए लगभग दस वर्ष हो गए थे और महाजन का कर्ज भी लगभग खत्म हो चुका था।

सोनू के पास कुछ भी पैसा नहीं था, लेकिन उसके अन्दर एक संतोष था कि उसने जो भी किया और कर रहा है, अच्छा ही कर रहा है। समय के साथ-साथ मोनू की भी मेहनत रंग लाई। अपने बड़े भाई के मार्गदर्शन पर छोटे भाई मोनू को भी एक सरकारी नौकरी मिल गई। यह समाचार सुनकर अमित इतना खुश हुआ कि वह अपनी खुशी को रोक नहीं पाया। मानो सिकंदर वाली जीत प्राप्त कर ली हो। सारे गांव में भी खलबली मच गयी। जो लोग अमित की भर्त्सना किया करते थे वही अब उसका गुणगान करने लगे। अमित को भी आत्म संतुष्टि हो गई कि उसने जो मन में ठाना था वो आज पूरा कर दिया अर्थात् अमित का अरमान पूरा हो गया।

समय के साथ-साथ सुमित का परिवार भी पूरी तरह से स्थायी हो गया। सुमित के बड़े बेटे को भी फौज में नौकरी मिल गई। अब वक्त ने फिर से अपनी करवट ली और उनलोगों का समय खुशी-खुशी बीतने लगा, दोनों बेटियाँ भी शादी करके ससुराल चली गयीं। अमित के दोनों बेटे नौकरी की वजह से शहर में रहने लगे। सोनू के माँ-बाप अब बूढ़े हो चुके थे। उन दोनों को अब अपने बच्चों की याद सता रही थी। उन्होंने दोनो बेटों और भतीजों को सफलता की सीढ़ी चढ़ाने में ही अपनी पूरी जिन्दगी गुजार दी। अब वे अपने बेटों के साथ रहकर अपना बाकी बचा हुआ जीवन जीना चाहते थे। दोनों बेटे कभी-कभी गाँव थोड़े दिनों के लिए तो आते थे, पर इससे अमित औऱ उसकी पत्नी का जी नहीं भरता था। एक दिन सोनू अपने माता-पिता को अपने साथ रहने के लिए शहर ले गया। दोनों पहली बार बड़ा शहर गए थे। शहर की जीवन-शैली उनके लिए पूरी तरह से भिन्न थी वे दोनों उसमें ढल नहीं पा रहे थें। उनको घुटन हो रही थी। उन्हें गाँव का खुलापन, रहन-सहन, भाईचारा शहर में नहीं मिल पा रहा था। एक दिन परेशान होकर उसने अपने बेटों से कहा- “बेटा, यहाँ मन नहीं लग रहा है। हमें गाँव पहुँचा दो।” सोनू उनकी भावनाओं को समझते हुए उन्हें गाँव पहुँचा दिया।

अमित को गाँव में अपने बच्चों की याद बहुत आती थी। वह कभी-कभी यह सोचने पर मजबूर हो जाता था कि उसने अपने बच्चों को इस मुकाम पर लाने के लिए क्या नहीं किया परन्तु उन्हें स्वयं से

दूर भी कर दिया। फिर वह यह सोचते हुए खुद को ढाढस देते – " मैंने अपनी जीवन में जो कष्ट किया, कम से कम अब वे लोग ये सब कष्ट तो नहीं झेलेंगे। " इस तरह उसके मन में हजारों बातें लहरों की भाँति उमड़ती रहती थी। कभी-कभी तो उसके मन में ये विचार भी उत्पन्न होते कि कहीं "कामयाबी में नाकामयाबी" तो नहीं मिल गई कि सभी को स्वयं से दूर कर बैंठे, जब समय खराब था तो सभी साथ मिलकर रहते थे परंतु आज जब समय अच्छा चल रहा है तो सबलोग दूर हो गए है और इस तरह वे आज तक "कामयाबी में नाकामयाबी" वाली कशमकश में पड़े हुए हैं। क्या उनकी इस उलझन का कोई समाधान है, मुझे मालूम नहीं!

मनीष कुमार महतो
वरिष्ठ अनुवादक

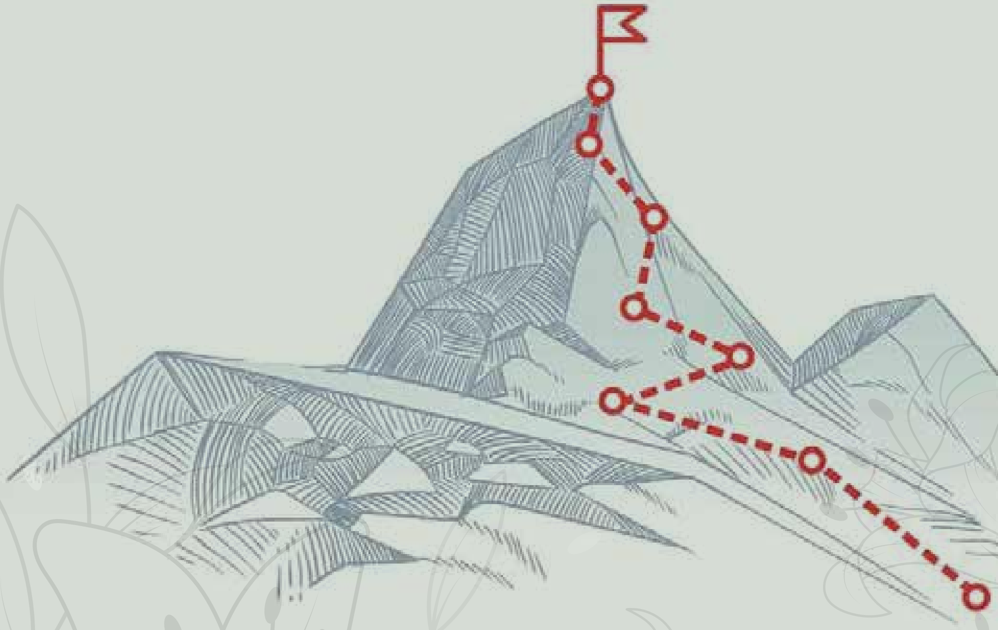

हिंदी पखवाड़ा-2022 की कुछ झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा-2022 की कुछ झलकियाँ

जोशीमठ - एक त्रासदी के इंतज़ार में

हिमालय की तलहटी में बसा जोशीमठ एक शांत एवं दर्शनीय पर्यटन स्थल है। जोशीमठ उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित है। समुद्रतल से इसकी ऊंचाई करीब 1850 मीटर है। जोशीमठ शब्द ज्योतिर्मठ शब्द का अपभ्रंश रूप है। इसे कभी कभी ज्योतिशमठ भी कहा जाता है। हिंदुओं के लिए यह स्थल धार्मिक आस्था का केंद्र है। यहाँ 8वीं सदी में आदि शंकराचार्य को ज्ञान प्राप्त हुआ और बद्रीनाथ मंदिर तथा देश के विभिन्न कोनों में तीन और मठ स्थापित करने के पहले उन्होंने प्रथम मठ की स्थापना जोशीमठ में ही की थी। शीतकाल के समय में इस स्थल पर भगवान बद्रीनाथ की गद्दी विराजित होती है। भौगोलिक दृष्टि से भी जोशीमठ अत्यंत महत्वपूर्ण है। उत्तराखंड के प्रसिद्ध 'वैली ऑफ फ्लावर्स' एवं 'ऑली' जाने वाले पर्यटकों के लिए यह शहर एक विश्राम स्थल भी है। इसके अलावा भारत-चीन सीमा से इसकी नजदीकी के कारण यह सेना के लिए भी एक अहम रणनीतिक पड़ाव है। लेकिन आजकल यह स्थल किसी अन्य कारण से देश में चर्चा का विषय बना हुआ है। इसकी दर्शनीय एवं भौगोलिक विशेषताएँ ही अब इस शहर के लिए एक अभिशाप बन गयी है।

साल 2022 के आखिरी कुछ महीनों से प्रकृति ने जोशीमठ में अपना प्रकोप दिखाना शुरू किया, जिसकी वजह से लोगों के मकान एवं अन्य मानव निर्मित संरचनाओं में दरार आनी शुरू हो गयी। भूविज्ञानियों का कहना है कि प्राचीन ग्लेशियर के अवशेष पर अवस्थित जोशीमठ एक बड़ी प्राकृतिक आपदा का शिकार बनने के करीब है। जोशीमठ भू धसान (Land Subsidence) नामक एक भूवैज्ञानिक घटना के कारण धीरे-धीरे सतह के नीचे धँसता जा रहा है। भू धसान आमतौर पर सतह के नीचे से जल, प्रकृतिक तेल एवं गैस एवं अन्य खनिज पदार्थों के आवश्यकता से अधिक निष्कासन के कारण होता है। भूमि के धसने

का अन्य कारण भूकंप, मृदा अपरदन, सिंकहोल (Sinkhole), मिट्टी में पानी के अत्यधिक मात्रा में जमना आदि है।

हिमालय के पर्वत-शृंखला के समानान्तर ही भारतीय टेक्टोनिक प्लेट (Indian plate) एवं यूरेशियन प्लेट (Eurasian plate) का कटाव (intersection) भी पड़ता है। दरअसल यह वह कटाव है जहां भारतीय टेक्टोनिक प्लेट धीरे-धीरे हिमालय की तरफ यूरेशियन प्लेट के भीतर खुद को धकेल रही है। करीब 14 करोड़ वर्ष पहले तक भारतीय प्लेट उस काल के सुपरकोंटीनेंट गोंडवाना (Gondwana) का अंग था। फिर करीब 10 करोड़ वर्ष पहले यह गोंडवाना से अलग हो गया। इसके बाद यह हिस्सा धीरे-धीरे अलग होकर उत्तर की दिशा की ओर खिसकना शुरू हो गया था। अभी का भारतीय उपमहाद्वीप भी इसी का अंग था जिसे इंसुलर इंडिया का नाम दिया गया। करीब 5.5 करोड़ यह हिस्सा यूरेशियन प्लेट से टकरा गया। इसी टकराव के बाद हिमालय का निर्माण हुआ जिसकी ऊंचाई आज भी बढ़ रही है। हिमालय पृथ्वी की नवीनतम पर्वत-शृंखला है। भारतीय प्लेट एवं यूरेशियन प्लेट के टकराव के कारण ये सतह के ऊपर भी यदा-कदा भूकंप के झटके आते है। इस कारण से हिमालय की तलहटी में बसे क्षेत्र हमेशा से भूकंप के लिहाज से अतिसंवेदनशील रहे है।

इंट्रा-थ्रस्टल फॉल्टलाइन के ऊपर अवस्थित होने के कारण भी जोशीमठ की यह दुर्गति हो रही है। यह फॉल्टलाइन करीब 50-60 किमी लंबी है

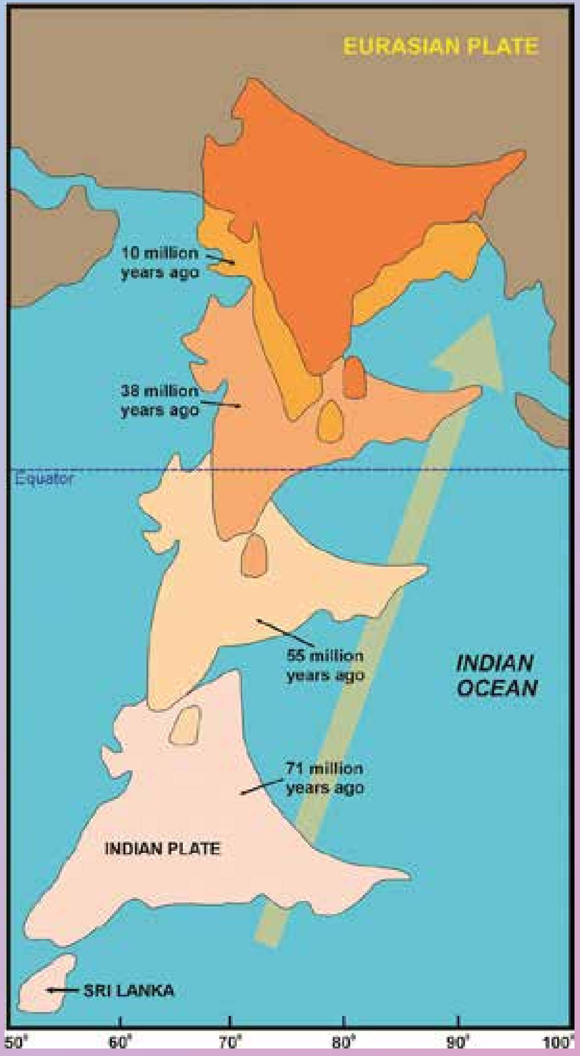

और इसका फिर से सक्रिय होना भी भूवैज्ञानिकों के लिए परेशानी का सबब बना हुआ है। कुल मिलकर देखा जाये तो इतने सारे घटकों का एक साथ सक्रिय होना वाकई जोशीमठ और आसपास के शहरों के लिए खतरे के घंटी है। कई वर्षों से यहाँ एक बड़ी प्राकृतिक आपदा की आशंका व्यक्त की जाती रही

है। यह सिस्मिक जोन – 5 के अंदर आता है, जिसमें भूकंप के लिहाज से सबसे संवेदनशील स्थान आते है। परंतु सबसे भयावह बात है जोशीमठ का प्राचीन ग्लेशियर के अवशेष पर बसा होना। जोशीमठ की सतह के नीचे कोई ठोस चट्टानों का समूह नहीं है बल्कि प्राचीनकालीन ग्लेशियर के मलबे है जिस कारण से इस शहर की बुनियाद ही कमजोर है। किसी भी संरचना को टिके रहने के लिए एक मजबूत बुनियाद की आवश्यकता होती है पर जोशीमठ में यह नदारद है। यहाँ की 20,000 लोगों की आबादी तथा पर्यटकों के भारी आवागमन को झेलना भी यहाँ के लिए मुश्किल प्रतीत होता है। अस्थिर बुनियाद एवं हाल के वर्षों में भारी निर्माण के वजह से यह इलाका भूमि विरूपण का भी शिकार धीरे-धीरे होने लगा है।

पिछले कुछ वर्षों से यहाँ वर्षा भी आवश्यकता से अधिक हुई है जिसका जल यहाँ की मिट्टी मे जम के भू धसान की उत्प्रेरणा का कारण बना है। यहाँ की सतह के नीचे ठोस चट्टानों के अभाव के कारण वर्षा का जल सतह की मिट्टी के अंदर जम के उसे अंदर से और खोखला बना रहा है। भारी निर्माण की वजह से यहाँ पर वनोन्मूलन भी तीव्र गति से हुआ है जिस कारण यहाँ की ऊपरी परत काफी ढीली हो चुकी है। वनोन्मूलन मृदा अपरदन का एक मुख्य कारण है। साल 2021 में यह इलाका बाढ़ की चपेट मे भी आ चुका है। तब नन्दा देवी ग्लेशियर के एक हिस्से के टूटने की वजह से हिमस्खलन उत्प्रेरित हुआ था जो आगे चलकर बाढ़ एवं भूस्खलन का कारण बना। इस आपदा के कारण उत्तराखंड में विशेषकर चमोली जिले में जान-माल की काफी क्षति हुई थी। चमोली जिले में अवस्थित होने के कारण जोशीमठ भी इससे अछूता नहीं था।

भारत सरकार जोशीमठ की वर्तमान स्थिति पर पैनी निगाह बनाए हुए है। प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार किसी भी भयावह स्थिति में जोशीमठ के नागरिकों का बचाव एवं स्थानांतरण सरकार की प्रथम प्राथमिकता है। इसके लिए उत्तराखंड सरकार द्वारा भी वहाँ के नागरिकों से लगातार बातचीत की जा रही है ताकि बचाव एवं स्थानांतरण के दौरान कोई गलतफहमी की गुंजाइश न रहे।

उत्तराखंड के दूसरे शहर जैसे कि नैनीताल, उत्तरकाशी, चंपावत आदि भी जोशीमठ के जैसा भारी निर्माण, वनोन्मूलन, जनसंख्या विस्फोट आदि के शिकार है। हालांकि ये इलाके ग्लेशियर के मलबे पर नहीं बसे है जो कि एक राहत की बात है। प्रकृति का अपना ही तरीका होता है अपने संसाधनों पर फिर से कब्जा करने का। नए शहरों को विकसित करने के पहले सरकार, नगर निकायों एवं हमें इन कारकों पर विचार करने की जरूरत है।

अतुल कुमार
लेखाकार

डिप्रेशन

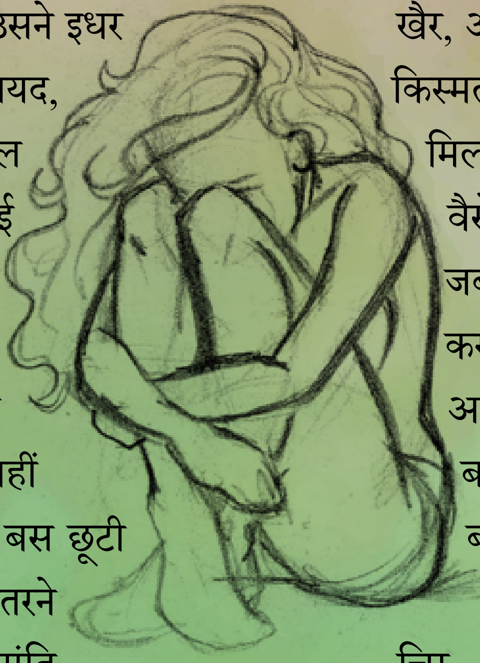

निशा की ट्रेन आज समय से थी। जैसे ही ट्रेन आई निशा भागकर अंदर जा घुसी। आज किस्मत कुछ ठीक थी। तीसरे नंबर की सीट मिल गयी। जब वह बैठ गयी, तब उसे ध्यान आया कि वो तो आज हड़बड़ी में उस बोगी के तीसरे नंबर गेट से चढ़ गई। मन थोड़ा खराब हुआ और उसने इधर – उधर नज़र दौड़ाना शुरू किया। शायद, कहीं कोई ढंग की जगह खाली मिल जाये। लेकिन वह थोड़ी लेट हो गई और ढंग की लगभग सभी सीटें भर चुकी थीं।

निशा अंदर से पूरी तरह से खीझ उठी। आज सुबह से ही समय ठीक नहीं है। पहले स्टेशन तक जाने वाली बस छूटी और अब जहां बैठी वहाँ ट्रेन से उतरने के समय तक एक मिनट की भी शांति शायद नसीब न होगी। दरअसल, जिस जगह पर आज वो बैठी है, उस जगह छः से सात लड़कियों का एक ग्रुप बैठता है। उस ग्रुप की एक लड़की, जो निशा के स्टेशन से शायद दो स्टेशन आगे से उठती है, आज ठीक उसके सामने की सीट पर बैठी थी। आज किस्मत ने साथ नहीं दिया और निशा उसी पैसेज में जा बैठी। उस ग्रुप की जो लड़की निशा के एकदम सामने बैठी थी, वो उठते ही बाकी की लड़कियों के लिए सीट की व्यवस्था करने में जुट जाती है। जबकि बाकी की लड़कियां करीब पाँच से छः स्टेशन बाद उठती हैं।

खैर, अब उसने खुद को और अपनी किस्मत को कोसना बंद कर जहां जगह मिली, वहीं बैठना उचित समझा। वैसे भी ठंडी की सुबह थी, सोचा जब तक थोड़ी शांति है, आँख बंद कर आराम ही कर लिया जाये। अभी तो अपना स्टेशन आने में बहुत टाइम है पाँच से छः स्टेशन बाद उस ग्रुप की सभी लड़कियां धीरे – धीरे आ ही गईं। वही चिर – परिचित आवाज़ें आने लगी लेकिन इतना ज़रूर था कि आज और दिनों की तुलना में थोड़ी शांति थी। निशा मन ही मन थोड़ी झल्लाई थी कि अब बस इनकी रोज़ की चें – चें पों -पों शुरू होने वाली है।

झल्लाते हुए निशा ने अपने बैग में से ईयरफोन ढूँढना शुरू कर दिया। उसे ईयरफोन इस्तेमाल

करना बिल्कुल पसंद न था, लेकिन उस स्थिति में उसे वही ठीक लगा। तय सीमा से थोड़ी ऊंची आवाज़ में फोन चला कर वह बैठ गई। लेकिन आज की स्थिति थोड़ी अलग थी, आश्चर्य की बात थी कि आज वो ग्रुप एकदम शांत था। कारण शायद यही था कि, जो लड़की उस ग्रुप की पहचान थी वो आज शायद नहीं आई थी। जिस स्टेशन से वो ट्रेन लेती है, वो तो कब का जा चुका था।

जो लड़की निशा से दो स्टेशन आगे से ट्रेन लेती है, उसका भी उत्साह और दिनों की तुलना में बहुत कम था। हाँ, इतना ज़रूर था कि उससे कभी - कभार निशा की थोड़ी बहुत बात होती थी। कई दिनों तो सीट लेने में उसने निशा की थोड़ी सहायता भी की थी। ग्रुप आज एकदम शांत था, उनको इतना चुप देखकर निशा ने सकुचाते हुए उस लड़की से इसका कारण जानने का मन बना ही लिया। उस लड़की का नाम पिंकी था। अब निशा को उसका नाम भी उसी लड़की से पता चला जो आज नहीं आई थी। वो लड़की मज़ाक करते हुए हमेशा उसे पिंकी दी, पिंकी दी बुलाया करती थी। बात शुरू कैसे किया जाए, यह सोचकर निशा ने पिंकी की तरफ हल्की सी मुस्कान के साथ देखा। जवाब में उसने भी निशा की तरफ देखकर मुस्कुराया। तब निशा ने थोड़ी बहुत इधर – उधर की बात करते हुए शुरुआत करना ठीक समझा। कुछ देर के बाद पिंकी को सामान्य होता देख निशा ने अपनी बात को घुमाकर रखा। उसने पूछा कि – क्या बात है ? आज आप सब लोग थोड़े शांत नज़र आ रहे हैं। अंदर से उसे थोड़ा बुरा भी लगा – ये सोच कर कि इतने सीधे तरीके से उसे ये बात नहीं पूछनी चाहिए थी। खैर, अब तो मुंह से शब्द निकल ही चुके थे, तो उसने खुद को सामान्य करने की कोशिश की। पिंकी ने शायद उसकी झेंप भाँप ली थी, एक लंबी सांस लेते हुए उसने बताया कि – वो जो पारोमिता है, उसका इलाज़ चल रहा है। निशा पहले तो कुछ समझ नहीं पाई, कारण वो उस ग्रुप में पिंकी को छोड़कर किसी और को नाम से नहीं जानती थी, बस चेहरे से ही पहचाना हुआ था सबको।

धीरे – धीरे पिंकी ने निशा को बताना शुरू किया जिसे सुन निशा बस अवाक ही रह गई। ये पारोमिता वही लड़की थी, जिसके कारण वो ग्रुप जाना जाता था। वो पूरे ग्रुप की जान थी। स्वभाव से एकदम चंचल, चुलबुली, बातूनी और पूरी जीवंत। वो हाईकोर्ट में काम करती थी। अभी एक – डेढ़ साल पहले ही उसने काम करना शुरू किया था। उस ट्रेन में हाईकोर्ट जाने के लिए जितनी महिलाएं, लड़कियां जाती थीं, लगभग सभी से उसका परिचय था। उसकी इस लोकप्रियता का भी एक ही कारण था – उसकी जीवंतता। वो हँसती भी विचित्र तरीके से थी, एक निश्चित पैटर्न था उसका। जो एक बार सुन लेता था, अपनी हंसी नहीं रोक पाता था। ख़ैर, निशा का ध्यान वापस पिंकी की ओर गया और वो चुपचाप उसे सुनने लगी।

निशा थोड़ी दुखी भी थी, सोचने लगी कि

अचानक ऐसा क्या हो गया कि जीवन से भरा एक चेहरा आज अंधेरे की तरफ बढ़ रहा है। ऐसी कौन सी बीमारी से वो ग्रसित हो गई कि उसे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा ? उधर पिंकी उदासी से और अपनी मन: स्थिति पर काबू करते हुए आगे बताने लगी कि परोमिता कमोबेश डिप्रेशन से ग्रसित है। अभी पिंकी ने ये कहा ही था कि निशा लगभग चीख उठी - क्या ? पिंकी बोली – हाँ। शहर के सबसे बड़े न्यूरो के अस्पताल में उसका इलाज़ चल रहा है।

निशा को आज भी पारोमिता की पहली झलक बहुत अच्छे से याद है। ऑफिस समय से पहुँचाने वाली इस एकमात्र ट्रेन में शायद वो पहली लड़की थी, जो शायद सबको कम से कम चेहरे से जानती थी। आश्चर्य की बात थी कि उसकी चुहलबाज़ी के कारण सभी उसे जानते थे। एकाध मौके तो ऐसे हुए कि उसने निशा से ऐसे बात की कि जाने कब से उसे जानती हो। शुरुआत में तो निशा को उसका स्वभाव थोड़ा अजीब भी लगा, लेकिन कुछ दिनों बाद उसे समझ आ गया कि पारोमिता वैसी बेबाक है ही और मज़े की बात थी कि वो सबसे उसी तरह हँसते – कहकहाते मिलती। पिंकी के शब्द बस ऐसे ही निशा के कानों में पड़ रहे थे लेकिन उसकी आँखों के सामने बस पारोमिता का हँसता - खेलता चेहरा किसी फिल्म की तरह दौड़ रहा था। ट्रेन झटके से अचानक स्टेशन से बस थोड़ी दूर पर जा रुकी, तब निशा की तंद्रा टूटी। पिंकी की ओर उसका ध्यान गया, उसके साथ - साथ उसका पूरा ग्रुप दुखी और परेशान दिखा। सबसे तो निशा कुछ ना बोल पाई, बस पिंकी की बाईं हथेली को हल्के से दबाकर मुस्कुराने का प्रयास किया। पारोमिता उस पूरे ग्रुप में पिंकी के सबसे करीब थी शायद। इसी वजह से पिंकी थोड़ी ज़्यादा परेशान लग रही थी। इतना था कि निशा के साथ थोड़ी बहुत बातचीत से उसका मन ज़रूर हल्का हो गया। ट्रेन चलती चली गई और सब अपने - अपने गंतव्य की ओर बढ़ चले। इतना ज़रूर था कि निशा आज ऑफिस में थोड़ी बेचैन सी थी। ऑफिस के काम में भी आज मन नहीं लग रहा था। अगले दिन फिर उसी ट्रेन में उसी जगह निशा बैठी थी और पिंकी उसी पैसेज के दूसरी तरफ की सीट से उसे देख मुस्कुरा रही थी।

ऑफिस पहुँचकर निशा डिप्रेशन के बारे में रोज़

कुछ – कुछ पढ़ती। उसे ध्यान आया कि पारोमिता की तरह ही एक और लड़की का ज़िक्र उसने कुछ समय पहले सुना था। शायद मार्च, 2021 का समय था। शहर में अभी भी कमोबेश लॉकडाउन की स्थिति थी। फ्लैट पर जो दीदी साफ – सफाई करती थी, आज थोड़ी लेट से आई थीं। उनके हावभाव भी आज थोड़े बदले दिखे। निशा ने उनसे चाय के लिए पूछा तो उन्होंने मना कर दिया। जबकि और दिनों वो खुद ही मांग लेती थीं। निशा को लगा कि आज उनका मूड कुछ ठीक नहीं, सो उसने दीदी से कुछ और नहीं पूछा और अपने काम में लग गई।

बालकनी से कपड़े लेकर निशा अपने कमरे की तरफ बढ़ी ही थी कि उसे अचानक सिसकने की आवाज़ आई। बेटे को तो अभी थोड़ी देर पहले वो कमरे में सुला आई थी। वह किचन की तरफ बढ़ी तो दीदी हल्की आवाज़ में रो रही थीं। और दिनों की तुलना में दीदी आज चुप तो थीं लेकिन वो इतनी परेशान थी इसका अंदाज़ा निशा को ना था। निशा ने पानी से भरा ग्लास उनको दिया जिसे उन्होने एक घूंट में खत्म कर दिया। वो अभी पूछने वाली ही थी कि शायद दीदी से रहा ना गया और उन्होने अपनी परेशानी बतानी शुरू की। अब दोनों हाल में बैठे थे और दीदी का रोना कुछ कम हुआ। उन्होने बताना शुरू किया – वो जहां रहती है, वहाँ से दो गली छोड़कर उनके कुछ रिश्तेदार रहते थे। उनके पति के चचेरे भाई जो दीदी के जेठ लगते थे, दीदी के पति के साथ ही काम करते थे। उनकी एक 18 वर्षीय बेटी और एक 13 वर्षीय बेटा था। उनकी बेटी ने रात को पंखे से लटककर आत्महत्या कर ली। इतना बताते - बताते तो दीदी की स्थिति खराब हो गई। निशा ने चुप कराने की कोशिश की और उन्हें घर जाने को कहा, साथ ही दो दिन की छुट्टी भी दे दी।

दो दिनों बाद दीदी अपने नियत समय पर ही आ गई थीं। निशा ने रोज़ की तरह उनके हिस्से की चाय गरम करके उनको दे दी। दीदी चाय पीकर अपना काम निपटाने में लग गई। आज उनकी स्थिति थोड़ी ठीक लगी निशा को। लगभग जब उनका काम समाप्ति पर था, निशा ने सोचा कि उस दिन के बारे में कुछ पूछा जाए। लेकिन उसे अजीब लगा और उसने अपना ये विचार छोड़ दिया। दीदी जाने ही वाली थी कि उसने सकुचाते हुए तीन दिनों की छुट्टी मांग ली, कारण बताया कि उस लड़की के क्रिया कलाप की विधि चल रही है, सो वो आने में असमर्थ है। निशा ने भी उनकी मांग मान ली और अपने काम में लग गई। तब दीदी ने खुद ही उस घटना का ज़िक्र कर दिया। वो बताने लगी – उस लड़की का नाम तुली था। पढ़ने – लिखने में बहुत तेज़ थी। उच्च माध्यमिक में बहुत अच्छे नंबर लाकर विवेकानंद कालेज में उसका दाखिला हुआ था। उसको देखकर कभी ऐसा लगा ही नहीं कि वो इस तरीके का कोई कदम उठा लेगी। सबके साथ हँसना, उठना, बैठना, सब काम में हाथ बँटाना – उसका यही स्वभाव था। हाँ, इधर कुछ दिनों से वो

परेशान तो थी। ख़ाना – पीना भी थोड़ा कम करती थी। उस रात भी उसने खाना नहीं खाया और सीधे अपने कमरे में चली गई। रात को जागकर उसे पढ़ने की आदत थी। माँ बाप को लगा कि कालेज में नए माहौल में ढलने में थोड़ी परेशानी हो रही है, कुछ दिनों में खुद ही ठीक हो जाएगी। उन्होंने उस रात उसे टोका नहीं, लगा कि खुद ही सो जाएगी। अगले दिन सुबह 10 बजे भी उसके कमरे का दरवाज़ा नहीं खुला, उसकी माँ को ये बात बहुत अटपटी लगी क्योंकि वो रोज़ सुबह

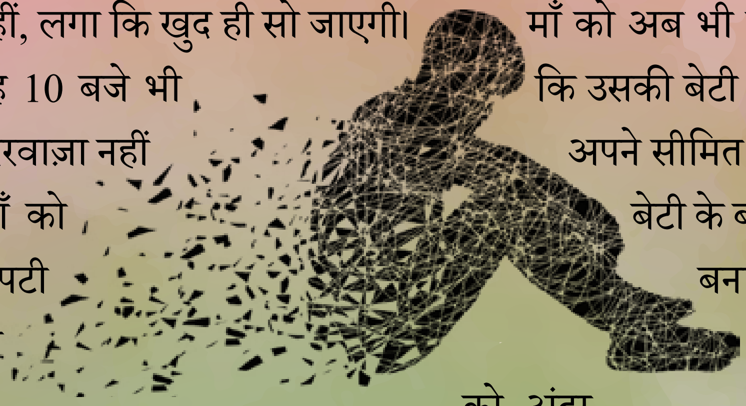

ही उठती थी। उसकी माँ ने तब चिल्लाते हुए ज़ोर से कमरे का दरवाज़ा पीटना शुरू किया, जिसे सुनकर आस – पास के लोग भी कमरे को खोलने में लग गए। बड़ी मेहनत से दरवाज़ा खोला गया। जैसे ही दरवाज़ा खुला, अंदर का दृश्य देखकर सबकी आँखें फटी रह गई। उसकी माँ तो उसी क्षण बेहोश हो गई।

आगे निशा ने कुछ जानने की चेष्टा नहीं की। दीदी की भी वैसी ही हालत थी, सो उसने बात आगे बढ़ाना ठीक न समझा। कुछ दिनों बाद दीदी काम पर लौट आई। उन्होने बताया कि तुली की एक डायरी मिली है, जिससे यह अनुमान निकला कि वो अपने वर्तमान जीवन से संतुष्ट नहीं थी। आस – पास के परिवेश की तुलना में अपने आपको हीन मानने लगी थी। बस, इसी दबाव में उसने ये आत्मघातक कदम उठा लिया। उसकी माँ को अब भी इस बात का विश्वास नहीं है कि उसकी बेटी अब इस संसार में नहीं रही। अपने सीमित संसाधनों में ही उसने अपनी बेटी के ब्याह के लिए आभूषण आदि बना कर रखवा लिए थे।

इन दो उदाहरणों ने निशा को अंदर से झँझोड़ कर रख दिया। आज जब हम सब तरफ से जीवन को आसान बनाने के ना जाने कितने संसाधनों, उपकरणों से घिरे हैं, फिर भी शायद ऐसा कोई माध्यम अभी तक नहीं बना जिससे मन मस्तिष्क की गहराइयों को नाप कर उनके भीतर चलने वाले असंख्य द्वंदों को शांत किया जा सके।

प्रियंका संजीव सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

मुफ्तखोर

यह बता पाना मुश्किल है कि बरसात में भी इस कस्बे में बारिश क्यों नहीं होती है? क्यों पक्षियों का गाना यहाँ रुदाली जैसा लगता है? क्या वजह है कि जब पूरी दुनिया में सूरज निकल जाता है, रात चली जाती है, सड़कों पर आवागमन निराले अंदाज़ में चलता रहता है तब भी यहाँ सड़कों पर पैदल चल पाना मुश्किल होता है, गर्दन सीधी करके सामने

देख पाना संभव नहीं हो पाता है? आखिर क्यों, नदी का पानी. जिसे सियार कुत्ते धड़ल्ले से पीते हैं, ये क़स्बा नहीं पी सकता है? भयंकर से भयंकर गर्मी में भी किसी पेड़ की छांव में दो पल सुस्ता लेना उन्हें क्यों नसीब नहीं होता है?

भूपत की नींद उचट गई जब उनकी चारपाई पर छोटे बच्चे ने साइकिल से ठोकर मार दी। बच्चे पर गुस्सा करने के बजाय भूपत ने गहरी साँस ली. एक पल के लिए लगा जैसे कि वह साँसों में तैर रहा हो और वह मानना चाहता था कि ये सब काश एक स्वप्न मात्र ही होता तो बहुत बेहतर होता। अभी ठीक से सचेत हुआ भी नहीं था कि परिषद का टैंकर पानी लेकर आ गया। कस्बे में टैंकर का आना हमेशा ही भगदड़ का कारण होता है। लोग जानते हैं कि एक बड़े या वयस्क इंसान पर 10 लीटर और बच्चे पर 5 लीटर पानी ही मिलेगा, फिर भी बेतरतीबी से इकट्ठा हो जाना उनकी रोज़ की आदत सी हो गई थी।

बर्थी परिषद का यह इलाक़ा सदियों से दलित बहुल रहा है, और सदियों की सामाजिक उपेक्षा आज भी जारी है। देश के कानून ने लोगों को बराबरी का अधिकार तो दे दिया है लेकिन बर्थी में ऊँची जाति के लोगों की संख्या अधिक है और राजनीतिक रूप से क्षेत्र में उनका पूरा दबाव है, इसलिए बर्थी की दलित आबादी आज भी बुनियादी मानवीय अधिकारों के स्वप्न देखती है। भूपत और उसके जैसे कुछ और दलित युवाओं ने अपने जवानी के दिनों में साहस करके, तरह-तरह के अपमान झेलकर किसी तरह से अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की और संविधान के प्रावधानों के

तहत प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने पर डाक विभाग में उन्हें सरकारी नौकरी मिल गई थी। बर्थी, प्रदेश का बेहद उपेक्षित इलाका था, उसमें भी दलित

सर्वाधिक उपेक्षित थे। स्थानीय भूगोल की अच्छी जानकारी होने के कारण भूपत की तैनाती बर्थी परिषद के डाकघर में हो गयी थी। भूपत लिपिक के पद पर तैनात था, लेकिन उससे चपरासी से लेकर मज़दूर तक का काम करवाया जाता था। उस क्षेत्र के ऊँची जात के लोग तो भूपत जैसों को पढ़ने ही नहीं देना चाहते थे, पढ़ने- लिखने में लाख बाधाएँ खड़ी की, और उस सब के बावजूद भूपत उनके सामने दफ्तर में आता है, सारा काम करता है और वेतन लेता है, ये बात उनके अहम को चोट पहुंचाती थी। ऊँची जात का गजानन रोज़ ताने मारता है, "ये लो, बाबू जी के बेटा साहब तो दिल्ली पढ़ते हैं, जैसे की डीएम बनकर ही मानेंगे" और कभी कहता "ज़रा अकड़ तो देखो, बाप दादे हमारे घर में काम करते थे, तिनकों पर पलते थे और ये साले..."

भूपत, दफ्तर में हमेशा शांत रहता था। डाकपाल और बाकी साथी जिनमें ऊँची जात वाले चपरासी भी शामिल थे अपना सारा काम भूपत से ही कराते थे। दलित बस्ती का डाकिया भी भूपत ही था दूर के गाँवों की डाक पहुँचाने का काम भी उसी के जिम्मे था। एक बार कड़क सर्दी की सुबह, जब रात आसमान साफ़- सुथरा था, हवाएँ ठप्प थीं, बहुत भयंकर पाला पड़ा हुआ था। एक बेहद ज़रूरी कागज उन्हें पास के गाँव संगीर के दुबे मास्टर के यहाँ देना था। मास्टर तो दकियानूसी खयालों से ऊपर उठ चुका था लेकिन वर्ण- व्यवस्था में श्रेष्ठता का गुमान अब भी पाले हुए था। उसकी पत्नी छुआछूत को मानती थी। जब भूपत संगीर में तड़के, पाले वाली सुबह में मास्टर जी के घर कागज देने पहुँचा तो दुबे मास्टर की पत्नी दरवाजे पर आई। उसने जल्दी-जल्दी में भूपत से वह कागज लिया और सीधे घर के अंदर चली गयी और जैसे ही उसे आभास हुआ तो अचानक वहीं से चिल्लाकर बोली- "तुम भूपत हो न बर्थी वाले?" भूपत जाने के लिए मुड़ा ही था। उसने सोचा कि एक बार झूठ बोल दे। लेकिन फिर उसने कहा सच बताना उचित है। वह भी चिल्लाकर ही बोला, "जी हाँ" और तेजी से अपने घर की ओर चल पड़ा। मास्टर जी की पत्नी रसोई में घुसने ही वाली थी कि कागज एक ओर फेंककर सीधे स्नानघर में भागी। पाला पड़ी हुई सुबह में

ये भी ध्यान न रहा कि नहाने से पहले पानी गरम कर लें। आनन-फानन में स्नान की। नहाते समय हर क्षण भूपत के लिए गालियाँ ही बकती रही। सरकार को भी गालियाँ दी कि ऐसे अशुद्ध लोगों को पढ़ाने लिखाने और नौकरी देने का कार्यक्रम क्यों बनाया। दो हफ़्ते गंभीर रूप से बीमार पड़ी रही.. भूपत पर कुपित होती रही। बीमारी तो ठीक हो गई थी लेकिन एक नासूर बन गई थी यह बीमारी, लगता था पीछा नहीं छोड़ने वाली। उस दिन संगीर की ऊँची जात वालों ने फ़ैसला कर लिया था कि उनकी डाक या तो कोई उनकी ही जात वाला लाएगा या वे स्वयं जाकर लाएँगे।

इस घटना के बाद दफ़्तर में सबने कहा कि भूपत ने ऐसा जानबूझकर किया है। डाकपाल ने शाम को दफ़्तर में भूपत को देर तक रोकना शुरू कर दिया। भूपत जब कुर्सी पर बैठता था तो पूरे दफ़्तर में ऊँची जातियों के अधिकारी-कर्मचारी गुस्से और रोष से भर जाते, लेकिन कुछ कर पाना उनके बस में नहीं था। भूपत को भड़काने के लिए रोज़-रोज़ ताने मारे जाते, निकम्मा बताया जाता लेकिन इन सबके बाद भी भूपत शांत रहकर, चुपचाप अपना काम करता था। उसे मालूम था कि ये लोग बेवजह किसी मामले में उसे किनारे लगा देने की साज़िश रचते रहते थे। ऐसा नहीं था कि भूपत का कोई भी साथ न देता हो। बर्थी परिषद के सदस्य और सचिव को भूपत जानता था। उनसे ही बात करके उसने अपने लोगों के लिए पानी हेतु प्रतिदिन टैंकर की व्यवस्था करवाई थी। पक्की सड़क भी पास हो गयी थी लेकिन बर्थी की ऊँची जात वालों को ये मंजूर न हुआ। लेखपाल को डंडे मारकर ये कहते हुए भगा दिया कि ये लोग पक्की सड़क पर चलने के लायक नहीं है।

भूपत, धीमी और सुस्त चाल से चलते हुए पानी के टैंकर तक पहुँचा। उसे याद है कि वह और उसके साथी जब हैंडपंप के लिए ठेकेदार के पास गए थे तो उसने साफ़-साफ़ मना कर दिया था कि वह बर्थी के उस इलाके में हैंडपंप नहीं लगा सकता, क्योंकि इससे उसके ग्राहक कम हो जाएँगे और काम ठप्प पड़ जाएगा। कितनी बार भूपत के पैसे लूट लेने की भी कोशिश हुई थी लेकिन भूपत कद-काठी में ठीक-ठाक था इसलिए उन लफंगों को उसने सबक भी सिखा दिया था। वह याद करने की कोशिश करता है कि पहली बार जब ऐसा हुआ था तब वह पुलिस थाने में शिकायत करने गया था। लेकिन वहाँ पर उसे आभास हुआ कि यहाँ न आना ही उचित था। बर्थी कस्बे में बहुत कम लोग थे जो भूपत और उनके जैसे दलित परिवारों का समर्थन करते थे। बर्थी परिषद के सचिव भी दलित थे इसलिए वे न केवल भूपत जैसे लोगों का समर्थन करते थे बल्कि बढ़-चढ़कर उनकी मदद भी करते थे। ये कहना बेकार है कि उन्हें यह काम बड़ी आसानी से करने दिया जाता होगा। लेकिन सचिव का पद पर्याप्त महत्वपूर्ण था इसलिए ऊँची जात वाले न चाहते हुए भी उनका बराबर सम्मान

करते थे। अपने आपस के झगड़ों और पैसे के लोभ में ऊँची जात वाले सचिव को अपने साथ मिलाकर रखना चाहते थे। सचिव महोदय थे तो दूसरे जिले के, लेकिन बहुत लंबे समय से उनकी तैनाती बर्थी में ही रही थी। उन्हें हटवाने की भी कई नाकाम कोशिशें की गई थीं।भूपत को याद आया कि उसने कल ही पानी भरकर रखा था इसलिए शायद आज न भी भरे तो भी काम चल जाएगा। लेकिन फिर उसका मन उसे झकझोरता है कि यहाँ कभी भी, कुछ भी हो सकता है। इसलिए पानी भरकर रखना बहुत ज़रूरी है। बेटा दिल्ली में रहकर पढ़ाई कर रहा है, उसे आइएएस बनना है, ऐसा वह हमेशा कहा करता था। बेटी भी अभी 12वीं में है। रिटायर होने में अभी 8 साल है, तब तक शायद दुनिया की ऊँच-नीच कुछ कम हो जाए, तब तक शायद कुछ बराबरी आ जाए लोगों में थोड़ा भाईचारा क्यों नहीं रख सकते लोग क्यों नहीं? जिस घर में कुत्ते-बिल्ली भी बिस्तर पर लेटते हैं, अच्छा- अच्छा खाना खाते हैं, उसी घर में हमें छू लेने से या उनके बर्तन में पानी पी लेने से पाप लग जाता है। उनके यहाँ सैंकड़ों बीधे ज़मीन परती पड़ी है और हमारे पास घर बनाने तक के लिए धरती का टुकड़ा तक नहीं है। आख़िर क्यों? क्या वे काबिल हैं? नहीं, उन्हें इंसान ही नहीं कहना चाहिए। दलाली और गुलामी करके, अपने लोगों से गद्दारी करके, अपने लोगों पर अत्याचार करके उन्हें धोखा देकर उन्होंने सब कुछ हासिल किया। ऊँची जात वाले कहते हैं तुम सब कामचोर हो, मुफ्तखोर हो । भला पूरी खेती कौन करता है उनकी? ये न कहें कि मज़दूरी देते हैं। झूठी कहानी गढ़कर पुरखों की ज़मीन हड़प ली, थोड़ा बहुत पढ़ने- लिखने का सोचा तो ओछी श्रेष्ठता को चोट लगी। वे बराबर अत्याचार कर रहें हैं, बस तरीका बदल गया है। थोड़ा-बहुत पढ़ना-लिखना भी उनसे बर्दाश्त नहीं होता उनसे। आज तो ऊँची जात वालों के श्रेष्ठताबोध में चिड़चिड़ापन और कुंठा ने भी अपना घर बना लिया है। कुछ भी बोलो, भड़क जाते हैं। मुफ्तखोर कहकर गाली देते हैं। हालत तो ऐसी होती जा रही है कि ऊँची जात वालों का श्रेष्ठ होने का भाव ज्वालामुखी की तरह सुलग रहा है। कभी भी फट सकता है। पहले तो शक्ल-सूरत से ही पता चल जाता था कि इनके दिमाग में क्या ख़ुराफात चल रहा है लेकिन अब ये कह पाना बहुत मुश्किल है कि ये क्या सोच रहे हैं? भूपत इतना तो समझता ही है कि ये कुछ भी सोचते हों लेकिन दलितों के लिए अच्छा तो कभी नहीं सोच सकते।

भूपत सोचता रहता था कि कब वह समय आएगा जब खुले आसमान को बिना किसी चिंता के वह निहार पाएगा? कब वह नदी के कल-कल निनाद में लयबद्ध होकर तैर पाएगा? क्या कभी बारिश में उसके समाज के लोग सुरक्षित घर में रात बिता पाएँगे? सर्दियों की शीत लहर और गर्मियों की लू से कब तक फूस की झोपड़ी ही उन सबको सुरक्षा प्रदान करेगी? क्या ज़मीन का छोटा सा

टुकड़ा बर्थी के हर दलित को मिल पाएगा जिसमें वे अपना घर बनाकर सुकून से रह पाएँगे? और सबसे जरूरी यह कि वह समय कब आएगा जब समाज के ऊँची जात वाले पाखंडी लोगों को अक़्ल आएगी, उनका विवेक जाग्रत होगा और वे इंसान को इंसान समझेंगे और भाईचारे और बराबरी को महत्व देंगे? भूपत ऐसा कई बार सोचता है फिर उसे अपने आप पर तरस आता है कि वह क्यों बार-बार इन सब बातों में उलझता है? लेकिन ये सड़ी हुई भेदभाव वाली समस्या सूरज चाँद और हवा-पानी की तरह तो शाश्वत नहीं है, एक न एक दिन ज़रूर ख़त्म होगी। लड़ाई तो किसी न किसी को लड़नी ही होगी। बात किसी एक की नहीं है, बात इंसान होने की है।

भूपत घर में से पानी भरने के लिए बर्तन लेकर बाहर आया तो सामने बर्थी परिषद के सचिव महोदय मिल गए। बोले, "मैं इधर से गुज़र नहीं रहा था। मैं यहाँ आया हूँ यह देखने के लिए कि क्या टैंकर का पानी सही तरीके से सभी को मिलता है?" भूपत ने जैसे हड़बड़ी में जवाब दिया, "हॉ, सचिव साहब सब लोग बहुत खुश हैं." इससे पहले कि भूपत की बात पूरी होती सचिव ने एक और प्रश्न पूछा -पानी ठीक हैन? कहीं घटिया पानी तो नहीं है? बीमारियाँ फैलेंगी उससे।" भूपत सतर्क हो गया था। उसे इस बात का डर हमेशा रहता था कि ऊँची जात वाले कोई भी साज़िश कर सकते हैं। एक बार ऐसा हुआ भी था कि टैंकर में ही किसी ने बोतल भर केरोसीन डाल दिया था। कुछ लोगों ने बुखार की शिकायत भी की थी।

सचिव महोदय जब जाने लगे तो उन्होंने भूपत को बताया कि संगीर गाँव की दुबे मास्टर की पत्नी कल रात को ही गुज़र गई। गजानन ने सचिव को ये खबर सुनाई थी। ये लोग मर जाएंगे लेकिन इंसान को इंसान नहीं मानेंगे, छुआछूत नहीं छोड़ेंगे, मेहनत नहीं करेंगे, थुलथुल, आलसी और निकम्मे बने पड़े रहेंगे, साजिशें रचते रहेंगे लेकिन बराबरी और भाईचारे को ठेंगा दिखाते रहेंगे। कब तक? कब तक ये मुफ्तखोर दूसरों को मुफ्तखोर कहते रहेंगे? ये सोचते हुए भूपत खोया हुआ था कि सायकिल वाले बच्चे ने आकर कहा- "कक्का, पानी नहीं भरेंगे क्या आज?" भूपत बर्तन उठाकर टैंकर की ओर बढ़ गया। हज़ारों स्वप्न उसकी खुली आँख पर तैरते रहते थे जैसे कि उसकी आँखें स्वप्नों को तैराने वाली नदी बन गई हो... |

आशीष कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

गुरु तेगबहादुर हिन्द की चादर

भारत की पुण्यभूमि में समय-समय पर ऐसे महापुरुष अवतरित हुए जो अपनी कीर्ति, त्याग, बलिदान और शौर्य से ऐसे मिसाल कायम किए जिन्हे युगों-युगों तक याद रखा जाएगा। ये महापुरुष अपने अदम्य साहस और पराक्रम एवं उच्च मानवीय गुणों से युक्त होने के कारण हमारे लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

सिक्खों के 9वें गुरु तेग बहादुर ऐसे ही महान दिव्य पुरुष थे, जिनके बलिदान, धार्मिक चेतना और धर्म की रक्षा हेतु प्राणों की आहुति को कोई भुला नहीं सकेगा। सन 1864 को गुरु तेग बहादुर को सिक्खों के 9वें गुरु के रूप में गद्दी पर बिठाया गया। उन्होने आनंदपुर साहिब को बसाया। गुरु तेग बहादुर सिंह सिक्खों को 6ठें गुरु, गुरु हरगोबिन्द सिंह के सबसे छोटे पुत्र थे।

दिल्ली में उस समय मुग़लों का शासन था। औरंगजेब दिल्ली की गद्दी पर बैठा था। औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता एवं इस्लाम के अलावा अन्य धर्मों के प्रति उसकी घृणा जग जाहिर है।

एक बार गुरु तेग बहादुर जब उत्तर भारत की यात्रा पर थे तो उन्हे मुगल सैनिकों ने गिरफ्तार कर औरंगजेब के दरबार में पेश किया। औरंगजेब द्वारा पुछे जाने पर कि वे हिंदुओं की रक्षा करने हेतु क्यों अपने प्राणों का जोखिम ले रहे है? गुरु तेगबहादुर ने बड़ी निर्भीकता से कहा "मेरा धर्म भले ही हिन्दू न हो, मैं भले ही वेदों की श्रेष्ठता, मूर्ति पूजा, और दूसरे रीति-रिवाजों में यकीन नहीं रखता हूँ। लेकिन मैं हिंदुओं के सम्मान से रहने और उनके धार्मिक अधिकारों के लिए लड़ता रहूँगा।"

औरंगजेब गुरु तेग बहादुर की बढ़ती लोकप्रियता और उनके बढ़ते प्रभाव से क्रुद्ध था। उनके दरबारी भी तेगबहादुर के विरुद्ध उसके कान भरे। एक बार औरंगजेब ने उन्हे मारने तक का मन बना लिया था परंतु गुरु तेग बहादुर को एक माह कारावास में रखकर उन्हे मुक्त कर दिया गया।

गुरु तेग बहादुर मथुरा, आगरा, वाराणसी होते हुए पटना जा पहुंचे। पटना में उनकी पत्नी माता गुज़री देवी थी। माता गुज़री देवी को जब पुत्र हुआ तब गुरु तेग बहादुर ढाका के दौरे पर थे। यही पुत्र बड़ा होकर सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिन्द सिंह बने।

मई 1675 को एक उल्लेखनीय घटना हुई। प्रसंग यह है कि गुरु तेग बहादुर अपने अनुयायियों के साथ संगत में बैठे थे। तभी कश्मीरी पंडितों का एक जत्था उनके सामने उपस्थित हुआ। पंडितों ने गुरु को अपनी व्यथा सुनाई। औरंगज़ेब के आदेश पर कश्मीर का गवर्नर उनपर अकल्पनीय अत्याचार कर रहा था। उनपर धर्म परिवर्तन कर इस्लाम अपनाने के लिए विवश किया जा रहा था वरना उन्हे बेरहमी से मार दिया जा रहा था। वे अपने धर्म और अपनी रक्षा हेतु गुरु तेग बहादुर से विनती करने लगे। गुरु उनकी दुर्दशा देखकर द्रवित हो गए, और उनकी रक्षा करने का फैसला लिया।

इधर औरंगजेब तेग बहादुर की उदारता एवं उनकी जनप्रियता से खासे चिढ गए थे। उन्होंने गुरु तेग बहादुर को दिल्ली बुला भेजा। गुरु तेग बहादुर भली-भांति जानते थे कि औरंगजेब उनपर धर्म परिवर्तन का दबाव डालेगा एवं इनकार किये जाने पर उनकी जान जायेगी। अतः उन्होंने अपने बाद अपने पुत्र गोविन्द सिंह को अगला गुरु बनाये जाने की घोषणा की।

गुरु तेग बहादुर अपने पांच शिष्यों के साथ रवाना हुए। इन शिष्यों के नाम भाई मतिदास, भाई सतिदास, भाई दयाला, भाई जैता, भाई उदय है। इधर रास्ते में रोपड़ के पास ही गुरु तेग बहादुर और उनके तीन अनुयायिओं को गिरफ्तार कर दिल्ली के चांदनी चौक थाने में बंद कर दिया गया। गुर तेग बहादुर के आदेश से भाई जैता और भाई उदय आगे की खबर लेने दिल्ली की ओर बढे थे। चांदनी चौक थाने में गुरु और उनके तीन शिष्यों को अमानवीय यातनाएं दी गयी। इस दौरान लगातार उनपर इस्लाम स्वीकार कर लेने का दबाव बनाया गया। औरंगजेब द्वारा पूरे चार माह कठोर प्रताड़ना के बावजूद भी गुरु तेग बहादुर और उनके शिष्य अपने धर्म के सच्चे आस्थावान बने रहे। औरंगजेब के अधिकारियों ने जब गुरु तेग बहादुर से पूछा कि वे हिन्दुओं कि रक्षा तथा उनके लिए क्यों अपनी जान जोखिम में डालते है। तब गुरु तेग बहादुर ने उत्तर दिया कि हिन्दू अभी कमजोर पड़ गए है, इसलिए वे हमारे पास शरण लेने आये है। यदि मुस्लिम भी इस तरह कि मदद मांगे तो उनकी धार्मिक स्वतंत्रता और रक्षा के लिए भी हम अपने जान की कुर्बानी भी दे सकते है।

औरंगजेब द्वारा लगातार प्रताड़ित किये जाने

के बाद भी जब गुरु तेग बहादुर नहीं झुके तो उसने ऐसा क्रूर सजा देने का निर्णय लिया जिसे सुनकर भी किसी का कलेजा काँप जाए। औरंगजेब के आदेश पर गुरु तेग बहादुर और उनके अनुयायी भाई मति दास, भाई सती दास, भाई दयाला दास जी को चाँदनी चौक में मृत्युदंड दिया जाना था। सबसे पहले काजी ने भाई मति दास का नाम पुकारा। भाई मति दास को दो खम्बो के बीच खड़ाकर बाँध दिया गया और उन्हें आरे से बीचो बीच चीर दिया गया। अगला नाम भाई दयाल दास जी का था। वहीँ पास में एक बड़े लोहे के पात्र में तेल खौलाया जा रहा था। मुग़ल जल्लाद सूखी लकड़ियाँ आग में झोंक रहें थे ताकि आग और प्रचंड हो। फिर भाई दयाल दास के हाथ-पैरों को अच्छी तरह रस्सी से बाँध दिया

ताकि वे हिल-डुल न सके। काजी का संकेत पाते ही उन्हें जल्लादों ने उठाकर खौलते तेल के कडाहे में फेंक दिया गया। कुछ देर में उनका शरीर भूनकर कोयला सा हो गया। भाई सती दस को दिया गया दंड भी कम भयावह नहीं था। उन्हें एक खम्बे से बांधकर उनके शरीर पर रूई लपेट दिया गया। जब उनके शरीर पर रूई का पहाड़ सा हो गया, तो रूई में आग लगा दी गयी। मृत्युदंड देने का ऐसा नृशंस विधान किसी ने पहले नहीं सुना था।

गुरु तेग बहादुर वही पास खड़े निर्भीक होकर उनकी शहादत देख रहे थे। अगले दिन गुरु तेग बहादुर को उसी स्थान पर लाया गया। जल्लाद नंगी तलवार लिए तैयार खड़ा था। गुरु तेग बहादुर का मस्तक ऊँचा था। चेहरे पर मृत्यु भय का नाममात्र भी चिन्ह नहीं था। जल्लाद के वार से ही गुरु तेग बहादुर का सर धड़ से अलग होकर भूमि पर गिर पड़ा। उपस्थित प्रत्यक्षदर्शियों में सन्नाटा छा गया। शहादत की ऐसी मिसाल, बहादुरी का ऐसा दृश्य

उन्होंने न कभी देखा था न सुना था।

गुरु तेग बहादुर की शहादत जिस स्थान पर हुई थी वहां बाद में शीशगंज साहिब गुरुद्वारा बनाया गया। गुरु तेग बहादुर के कटे सर को उनके अनुयायी भाई चैता दास दिल्ली से आनंदपुर साहिब ले गए। वहां गुरु के सर को सम्मानपूर्वक दफनाया गया। बाद में वहां भी शीशगंज साहिब नाम का एक अन्य गुरुद्वारा बनाया गया। गुरु तेग बहादुर के धड़ को उनके एक अन्य शिष्य ने रकाबगंज में ले जाकर उनकी अंत्येष्टि की। उस स्थान पर एक गुरुद्वारा बनाया गया है।

गुरु तेग बहादुर के बलिदान का तत्कालीन समाज पर गहरा असर पड़ा। मुग़ल बादशाह औरंगजेब के द्वारा किये गए अमानवीय अत्याचार और धार्मिक कट्टरता के कारण ही इस शक्तिशाली मुग़ल साम्राज्य के पतन की शुरुआत हो गई।

गुरु तेग बहादुर ने गुरु नानक के सिद्धांतों का प्रचार प्रसार किया। उन्होंने गुरुवाणी को जन जन तक पहुंचाने के लिए लंबी यात्राएं की। उन्होंने सभी धर्मों के प्रति आदर भाव रखकर गुरुवाणी के जरिए समाज में सहिष्णुता, प्रेम, सहयोग एवं मानवता का संदेश दिया। इसलिए लोग उन्हें सम्मान पूर्वक 'हिंद की चादर' कहते हैं।

गुरु तेग बहादुर के उपदेश प्रेम एवं मानव कल्याण के बुनियाद हैं। वे कहते हैं, "हे संतो! अहंकार को त्यागो और हमेशा काम,क्रोध और बुरी संगत से दूर रहो।"

एक अन्य संगत में उन्होंने कहा "अपना सिर चढ़ाओ, परंतु जिन की रक्षा करने का वचन तुमने दिया है उन्हें ना छोड़ो। अपने प्राणों की बलि चढ़ाओ, परंतु अपने विश्वास को न त्यागो।

गुरु तेग बहादुर का साहस, बलिदान एवं त्याग प्रकाश स्तंभ की भांति हमें सदा आलोकित करता रहेगा।

श्रीमती सुष्मिता सरकार
वरिष्ठ लेखाकार

जिंदगी का साथ निभाते : साहिर

अधिकांश लोग गीत-संगीत पसंद करते हैं। उनमें कुछ लोग गीत सुनना या गुनगुनाना बहुत पसंद करते हैं। हम इसलिए गीत-संगीत पसंद करते हैं क्योंकि इसमें एक सुंदर धुन होती है और एक सुंदर आवाज भी रहती है। जब हम किसी गीत को सुनकर आनंद पाते हैं तो सोचते हैं कि इस गीत को किसने गाया होगा? हम आसानी से उस गायक की खूबसूरत आवाज पहचान लेते हैं और फिर कभी उस गायक का दूसरा कोई गीत सुनते हैं तो आसानी से उसे पहचान लेते हैं कि यह गीत अमुक गायक ने गाया है। हम इस तरह के कई महान गायकों को जानते हैं जैसे कि किशोर कुमार, मुहम्मद रफी, मुकेश, लता मंगेशकर, आशा भोसले, अल्का याज्ञनिक, कुमार सानू, उदित नारायण आदि।

लेकिन जब एक गीत बनता है तो इसमें तीन महत्वपूर्ण चीजों को जोड़ना पड़ता है- बोल, संगीत और गायक की आवाज। किसी एक को छोड़ देने से गीत नहीं बन सकता। कुछ मामलों में जब किसी गीत का संगीत हमारे हृदय को स्पर्श करता है तो हम जानना चाहते हैं कि इसका संगीत किसने दिया है। लेकिन यह एक कटु सत्य है कि बहुत कम लोग ये जानने का प्रयत्न करते हैं कि गीत के बोल किसने लिखे हैं और संगीत को सुरों में किसने सजाया है और किसने गाया है?

वास्तव में गीत के बोल किसी गीत का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है। गीतकार वह पहला व्यक्ति

होता है जो परिस्थिति, थीम और मूड को समझता है और फिर किसी गीत को आकार देता है। साथ ही संगीतकार को सुझाव देता है कि कौन सा राग, उस गीत के लिए उपयुक्त होगा और कौन सा

गायक उस तरह के गीत को उत्कृष्ट तरीके से गा सकेगा। इस लेख में मैं एक महान गीतकार को याद कर रहा हूँ जिसने 1955 से 1975 के दशक में सैकड़ों गीत लिखे, जो उस दौर के महान गायकों की आवाज में लोकप्रिय हुए। वे महान गीतकार हैं साहिर लुधियानवी। उनका जन्म 8 मार्च 1921 को एक जमींदार परिवार में हुआ था। उनका नाम अब्दुल हयी साहिर था। मैं यहाँ पर उनके लिखे गए कुछ महान गीतों की चर्चा कर रहा हूँ।

1957 में 'नया दौर' नामक एक फिल्म प्रदर्शित की गई। दिलीप कुमार और वैजयंतीमाला इसमें मुख्य भूमिका में थे। इस फिल्म के सभी गीत साहिर लुधियानवी जी के द्वारा ही लिखे गए थे जो कि मुहम्मद रफ़ी और आशा भोंसले के स्वर और ओ.पी. नैयर के संगीत में लोकप्रिय हुए। इसमें से कुछ बहुत ही लोकप्रिय रहे-

"माँग के साथ तुम्हारा" (रफी साहब और आशा जी)

और

'साथी हाथ बढ़ाना,

एक अकेला थक जाएगा

मिलकर बोझ उठाना (कोरस सहित रफी साहब और आशा जी)

ठीक उसी साल 1957 गुरुदत और माला सिन्हा की फिल्म ‘प्यासा’ प्रदर्शित की हुई थी जिसमें साहिर लुधियानवी के गीतों की धुन एस.डी. बर्मन जी ने बनाई थी और गीत को मुहम्मद रफी और गीता दत्त ने गाया था। गीत इस तरह से है-

‘हम आपकी आँखों में इस दिल को बसा दें तो’

1960 में प्रदर्शित भारत भूषण और मधुबाला अभिनीत फिल्म बरसात की रात में साहिर साहब के गीतों की धुन रोशन जी ने बनाई थी जिसे मुहम्मद रफी साहब ने गाया था-

‘जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात

एक अंजान हसीना से मुलाकात की रात’

वर्ष 1961 में देवानंद और साधना अभिनीत फिल्म हम दोनों में साहिर साहब के बालों को संगीतकार जयदेव ने सुरों में पिरोया था और रफ़ी साहब और आशा जी ने अपनी मधुर आवाज दी थी। गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ था-

"अभी न जाओ छोड़कर, कि दिल अभी भरा नहीं”

वर्ष 1963 में दो फिल्में 'ताजमहल’ व ‘दिल ही तो है’ प्रदर्शित हुई थी जिसमें पहली में प्रदीप

कुमार व वीना रॉय तथा दूसरी में राजकपूर व नूतन ने अभिनय किया था। इन दोनों फिल्मों के गीत साहिर साहब ने लिखे थे और रोशन जी ने धुन बनाई। ताजमहल का गीत था-

"जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा" (रफी साहब और लता जी)

और दिल ही तो है' का गीत था-

'लागा चुनरी में दाग (मन्ना डे साहब)

दोनों ही गीत बहुत ही लोकप्रिय हुए। 1963 के समय कॉलेज की पीढ़ी इन गीतों से आनंदित होती थी और आज भी आनंदित होती है। इन गीतों का जादू ऐसा है जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जासकता है, इन्हें सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

1965 की लोकप्रिय फिल्म वक्त में साहिर साहब, मन्ना डे और रवि के संगीत ने फिर दर्शकों को आनंदित किया, और आज भी ये गीत बहुत लोकप्रिय है-

'ऐ मेरी जोहरा जबीं, तुझे मालूम नहीं"

1965 में ही फिल्म 'काजल' का एक भजन बहुत ही लोकप्रिय रहा है जिसे साहिर साहब ने लिखा और रवि की धुनों को आशा जी ने अपनी आवाज दी-

'तोरा मन दर्पण कहलाए'

साहिर साहब के गीतों से मालूम होता है कि वे मन और कर्म को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। 1968 में राजकुमार,मनोज कुमार और वहीदा रहमान अभिनीत बेहद लोकप्रिय फिल्म में साहिर साहब ने फिर अपनी लेखनी का जादू दिखाया। रवि के संगीत से सजे इस गीत को रफ़ी साहब ने गाया था-

'तुझको पुकारे मेरा प्यार'

यह गीत इतना मर्मस्पर्शी है कि लोगों के दुःखों का अपनी आवाज देता है। एक अंतरा देखें –

'इतने युगों तक, इतने दुखों को कोई सह ना सकेगा'

इसी साल एक और फ़िल्म प्रदर्शित हुई जिसमें धर्मेन्द्र और तनुजा मुख्य भूमिका में थे। गीत के बोल साहिर साहब ने लिखे थे और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के संगीत को लता जी और रफी साहब ने आवाज दी। फिल्म का नाम था इज्ज़त-

'ये दिल तुम बिन कहीं लगता नहीं हम क्या करे'

1972 में प्रदर्शित फिल्म दास्तान के लिए साहिर साहब के एक और गीत के लिए लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने संगीत दिया था, जिसमें दिलीप कुमार जी ने अभिनय किया था जिसका एक मशहूर गाना था जिसने सभी चाहने वालों को आनंदित कर दिया था-

'न तू जमीं के लिए, है ना आसमाँ के लिए'

इसके बाद जब नई पीढ़ी आई जिसमें राजेश खन्ना, अमिताभ, धर्मेंद्र, शर्मिला टैगोर, राखी गुलज़ार, हेमा मालिनी आदि शामिल थे तो उनके लिए भी साहिर लुधियानवी साहब ने कई गीत लिखे जिन्हें हम आज भी पसंद तो करते हैं लेकिन शायद जानते नहीं कि गीतकार कौन है। यहाँ मैं तीन से

चार ऐसे ही मशहूर गानों का जिक्र करूंगा जो आज भी सदाबहार हैं। वर्ष 1973 में राजेश खन्ना और शर्मिला टैगोर अभिनीत 'दाग़' में साहिर साहब के लिखे गीत और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत को हरफनमौला किशोर दा ने अपनी आवाज दी-

'मेरे दिल में आज क्या है, तू कहे तो मैं बता दूँ'

1975 में आई फिल्म 'जमीर' में अमिताभ बच्चन पर फिल्माया गया और सपन चक्रवर्ती के संगीत में बधें गीत को एक बार फिर किशोर दा ने अपनी आवाज दी-

'तुम भी चलो हम भी चलें, चलती रहे जिंदगी'

1976 में ख़य्याम के संगीत से सजी फिल्म 'कभी-कभी' का एक बेमिसाल गीत आया-

'कभी-कभी मेरे दिल में खयाल आता है'

अपनी मखमली आवाज में मुकेश ने इस गीत में जैसे जादू भर दिया था। गीत को साहिर साहब ने ही लिखा था।

साहिर लुधियानवी साहब को साल 1964 में फिल्मफेयर पुरस्कार व 1971 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 25 अक्तूबर 1980 में साहिर साहब ने दुनिया की अलविदा कहा। जब भी गीतों की बात होगी साहिर साहब का नाम अमर रहेगा। उनके शब्दों में-

"तुम न जाने, किस जहां में खो गए
हम भी दुनिया में तन्हा हो गए"

श्री रेवती रंजन पोद्दार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

"

अश्कों ने जो पाया है वो गीतों में दिया है
इस पर भी सुना है कि ज़माने को गिला है
जो तार से निकली है वो धुन सब ने सुनी है
जो साज़ पे गुज़री है वो किस दिल को पता है

— साहिर लुधियानवी

सच तक

कुछ वर्ष पहले की बात है, शहर से कुछ दूरी पर एक गाँव हुआ करता था। जिस गाँव में एक बहुत ही गरीब परिवार रहा करते थे। उनके तीन बच्चे थे, दो लड़के और एक लड़की। दोनों लड़के, लड़की से बड़े थे। उनके माता–पिता बहुत ही मेहनत किया करते थे। वे अपने बच्चे को बहुत ऊंचे मुकाम पर पहुंचाने के लिए हर एक कदम उठाने को तैयार रहते। धीरे–धीरे समय बीतता गया और उनके बच्चे भी बड़े होते गये। बड़े लड़के का नाम मनीष और छोटे लड़के का नाम अमित और बहन का नाम मनीषा था। अपने गाँव के ही सरकारी स्कूल में ही मनीष और अमित दोनों को नामांकन करवा दिया। बहन उस समय छोटी थी और घर पर ही रहा करती थी। बड़ा बेटा मनीष बचपन से ही पढ़ाई में बहुत तेज था और छोटा बेटा अमित बहुत ही शरारती था। दोनों भाइयों में बहुत नोक-झोंक होने के बावजूद भी दोनों एक दूसरे के लिए जिया करते थे। बहन को दोनों भाई जी जान से ज्यादा प्यार करते थे। यह सब देख उनके माता-पिता बहुत ही खुश रहा करते थे। मनीष को अपने माता – पिता का मेहनत करते देख मन ही मन बहुत तकलीफ हुआ करती थी, लेकिन वे किसी को भी इस बात की भनक नहीं लगने देता कि उसे किसी बात की तकलीफ है। धीरे–धीरे मनीष अपने स्कूली पढ़ाई में पूरे क्लास में प्रथम आने लगा। अमित अपने क्लास में शरारती नंबर वन था। उधर बहन मनीषा जब थोड़ी बड़ी हुई तो उसी गाँव के सरकारी गर्ल्स स्कूल में उसका भी नामांकन करवा दिया गया। वह भी पढ़ाई में बहुत तेज थी । इसी तरह तीनों अपने–अपने रास्ते पर चलने को तैयार हो गए।

माता–पिता की कड़ी मेहनत का तो रंग लाना ही था, बड़े बेटे मनीष ने अपने पूरे गाँव में बोर्ड की परीक्षा सबसे अधिक नंबरो के साथ प्रथम स्थान लाकर उत्तीर्ण करके अपना नाम और अपने माता – पिता, साथ ही पूरे गाँव का नाम रौशन किया। यह देख उनके माता- पिता की खुशी का ठिकाना नहीं। मनीष को पता भी नहीं ये क्या हो रहा हैं। गाँव के लोग मिठाई बांटने लगे। मनीष को बहुत सारी शुभकामनाएं देने वालों का ताँता लग गया। मनीष को गाँव के सभी लोगों का सहयोग मिलने लगा। मनीष अपने माता-पिता को खुश होता देख और भी खुश रहा करता था। उसे अहसास होने लगा कि मैं अपने माता – पिता के चेहरे पर और भी मुस्कान दे सकता हूँ। मनीष ने और ज्यादा मेहनत करना शुरू

कर दिया। इधर मनीष का छोटा भाई अमित भी दो वर्षों के बाद बोर्ड की परीक्षा देने के लिए तैयार हो गया था। सभी लोग सोचते थे ये लड़का जरूर अपने माता–पिता का नाम खराब करेगा क्योंकि अमित तो पढ़ाई-लिखाई के स्थान पर खेलना-कूदना बहुत ज्यादा पसंद करता, हर वक्त सिर्फ खेल – कूद में ही लगा रहता था। अमित का बड़ा भाई मनीष भी अपने छोटे भाई को पढ़ाने की बहुत कोशिश करता परंतु वह कोई न कोई बहाना बनाकर इधर–उधर करने लगता। इस वजह से मनीष भी अपनी पढ़ाई में पूरा समय नहीं दे पाता था। इधर अमित की बोर्ड परीक्षा चालू हो गई। वह परीक्षा देने के बाद क्रिकेट खेलने भाग जाया करता था। माता-पिता अमित से बहुत परेशान रहते, कि बड़ा बेटा तो देखो पढ़ाई–लिखाई में कितना अच्छा है और ये मेरा छोटा बेटा अमित को किसी बात का कोई मतलब ही नहीं है।

परंतु जब बोर्ड परीक्षा का परिणाम आया तो अमित भी द्वितीय स्थान से बोर्ड की परीक्षा पास कर गया। अब तो पूरा परिवार खूशी से झूम उठा। किसी ने कभी भी नहीं सोचा था कि अमित परीक्षा भी पास कर सकेगा परंतु अमित खेल- कूद के साथ जो थोड़ा समय पढ़ता वही उसके लिए बहुत हो जाता, अमित का दिमाग बहुत ही तेज था पढ़ाई – लिखाई में। तो बहुत ही कम समय पढ़ने के बावजूद भी वह किसी भी परीक्षा में फेल नहीं होता। इधर उसका बड़ा भाई मनीष भी अपने छोटे भाई से बहुत खुश है । मनीष बहुत ही कम उम्र में अपने जीवन में एक सपने को सजों कर रखा था, इंजीनियर बनने का सपना जो सिर्फ मनीष ही जानता था। मनीष को मानों माता सरस्वती का वरदान ही मिल गया हो, अपनी पढ़ाई के साथ – साथ वह एक इंजीनियरिग इंस्टिट्यूट में इंजीनियरिग वाले छात्र-छात्राओं को पढ़ाया करता है। किसी को भी पता नहीं होता है ये सब क्योंकि मनीष नहीं चाहता कि ये सब किसी को पता चले। मनीष अपनी तरह के गरीब बच्चों को मुफ्त में ही इंजीनियरिंग की पढ़ाई करवाता। वह यही चाहता कि जो असमर्थ हो उसे भी अपनी प्रतिभा दिखाने का पूरा हक है। मनीष अपनी पढ़ाई का कुछ खर्च खुद ही उठाने लगा। मनीष का जीवन सिर्फ और सिर्फ पढ़ाई-लिखाई से ही जुड़ा रहता था, मानों सामने और कुछ नजर ही नहीं आ रहा है। माता–पिता भी सोचने लगे कि इस तरह से पढ़ाई –लिखाई करेगा तो ना जाने आगे क्या होगा? वह खाना पीना भी समय पर नहीं करता था। सामने खाना परा रहता लेकिन उसे कुछ दिखाई ही नहीं देता था। वे तो सिर्फ नाम का खाना खाता ये सोचकर उसके माता-पिता बहुत ही परेशान रहते। वे बोलते बेटा इतना पढ़ाई-लिखाई नहीं करो कि सामने क्या हो रहा है, कुछ पता ही नहीं चले। खाना ठंढा हो जाता, वह खाना क्या खाता, कब खाता उसे खुद भी पता नहीं होता। अगर उससे पूछ लिया जाता कि आज क्या खाना–खाना है तो वह बोलता कि आप जो बना दो मैं खा लूगा।

उसे सिर्फ और सिर्फ किताबों में डूबा रहना पसंद रहता। इसी से उस गाँव के सब लोगों को धीरे-धीरे पता चल गया कि मनीष तो सिर्फ किताबी

कीड़ा है। मनीष को सिर्फ पढ़ना और पढ़ाना पसंद है। कॉलेज के प्रोफेसर भी मनीष से बहुत खुश रहा करते थे। मनीष अपने कॉलेज का भी टॉपर था। इधर मनीष बहुत ही कम समय में बहुत कुछ हासिल कर लिया था। मनीष इंजीनियरिग में अपना मुकाम हासिल करना चाहता था, उसे पता था कि उसके माता-पिता का आशीर्वाद तो है लेकिन उसे पैसे भी चाहिए होंगे जिसका भार माता-पिता नहीं उठा सकते थे। यह जानते हुए मनीष ने अपना जीवन किताबों के साथ जोड़ना ज्यादा पसंद किया।

इधर अमित ने कॉलेज में भी शरारत करना नहीं छोड़ा। पढ़ाई वह कब करता, कैसे करता किसी को पता नहीं चलता। लेकिन हर बार की तरह वह इंटर की परीक्षा भी द्वितीय स्थान से पास कर लिया। ये सब बातें सोच माता-पिता और भी खुश रहते लेकिन वे अमित की शरारतों से भी परेशान रहते थे। कभी वह कॉलेज में किसी से झगड़ा कर लेता तो उसकी शिकायत घर तक आ जाती , कभी गली मोहल्ले में झगड़ा-झंझट कर बैठता। कभी वह पशु-पक्षियों को ईंट के निशानों से घायल कर उसे पकड़ लेता और उन्हें बहुत सताता था। एक बार तो हद ही हो गई जब वह अपने नानी के गाँव गया तो वहाँ एक बकरी के बच्चे को गाँव के कुएं में उठाकर फेक दिया। तभी उसके मामा जी ने उस बकरी को निकाला। उसे किसी भी पशु-पक्षियों से डर नहीं लगता था, वह तो उसे खिलौने के तरह इस्तेमाल करना पसंद करता। आम के बगीचों में जाकर आम के गाछ पर चढ़ आम तोड़ना, बेल गाछ पर चढ़ बेल, जामुन गाछ पर चढ जामुन तोड़ना, बैर गाछ, अमरूद गाछ, कटहल गाछ, नारियल गाछ इत्यादि पर चढ़ना उसे तोड़ना काफी अच्छा लगता। वह किसी भी गाछ पर बिना किसी भी सहारे के तुरंत चढ़ जाता। यह सब देख उसके माता – पिता अमित से बहुत ही परेशान रहते कि कहीं अमित गाछ–वृक्ष पर चढ़ते समय गिर न जाए। उन्हें अमित की चिंता बहुत सताती रहती। अमित कितना भी शरारती क्यों न हो परंतु वह अपने माता-पिता और अपने भाई–बहन का बहुत ही प्यारा था।

इधर मनीष की मेहनत रंग लाती है, मनीष अपनी

मेहनत के बल पर इंजीनियरिंग की परीक्षा पास कर लेता है और अपनी मंजिल को पा लेता है। इस बात से पूरे गॉव में खुशहाली आ जाती है, सभी के मुह पर एक ही नाम रहता है मनीष...मनीष... मनीष की मेहनत तो रंग लानी ही थी। माता-पिता और उसके भाई–बहन को अब बहुत बड़ा सहारा मिल गया है। अब बड़ा भाई मनीष अपने छोटे भाई अमित और मनीषा की हर तरह से मदद करने में सक्षम हो जाता है। बड़े भाई मनीष ने अपने छोटे भाई अमित को हर परीक्षा में सफल होने पर एक बाईक गिफ्ट किया। अमित

अब तो बहुत ही खुश रहने लगता है। अब तो अमित कॉलेज भी बाईक से जाने लगता है। माता-पिता की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता। माता-पिता पहले जैसे जीवन जीते थे आज भी उसी तरह से अपना जीवन जीना पसंद करते रहे। माता-पिता को हर कोई बोलता कि अब तो आपका बड़ा बेटा मनीष बहुत ही अच्छी जगह पहुँच गया है, अब तो आपको अपना जीवन जीने का तरीका बदल लेना चाहिए, परंतु उसके माता-पिता पहले की ही तरह साधारण जीवन जीना पंसद करते हैं। ये सब देख बड़ा बेटा मनीष खुद भी बोला करता- अब तो आप सब बदल जाओ, अब तो आप अपने जीवन जीने का तरीका थोड़ा बदल लो। माता-पिता कहते- बेटा हमारा क्या है हम तो पहले भी जैसे जीते थे हमें आज भी वैसे ही जीना बहुत अच्छा लगता है। तुम दोनों भाई और बहन अच्छा मुकाम हासिल कर लो और मुझे क्या चाहिए। तुम्ही लोगों से तो मेरा संसार है, तुम लोग हमेशा खुश रहो, मुझे और क्या चाहिए। हमारी खुशियां तुम्हीं लोगों से शुरू होती है और तुम्ही लोगों पर खत्म होगी, यही हमारी भगवान से पार्थना है।

पता नहीं इस तरह से अपने माता-पिता की बातें सुन अमित को क्या हुआ। वह भी पढ़ाई लिखाई में अपने आप को जोड़ने की कोशिश करने लगा जबकि अमित को क्रिकेट खेलना बहुत ही अच्छा

लगता। अमित कॉलेज में भी क्रिकेट खेला करता था। परंतु माता-पिता की बातें जैसे उसके दिलो-दिमाग में बस गई हों। उसने अपने शरारती अंदाज को नहीं छोड़ा लेकिन अपने पढ़ाई –लिखाई में अपने बड़े भाई की तरह बनने की कोशिश करने लगा। साथ ही साथ अमित कॉलेज के युवा नेताओं के भी संपर्क में आता चला गया। वहाँ से अमित की कुछ और शरारती दोस्तों से मुलाकात होने लगी और अमित का दिमाग और तेज दौड़ने लगा। अमित कुछ बड़ा करने का सपना देखने लगता है। परंतु उसके माता–पिता को उसका ये सपना अच्छा नहीं लग रहा था। वे चाहते थे कि अमित कोई सरकारी नौकरी करे जिससे उसको पढ़ाने–लिखाने का माता-पिता का सपना पूरा हो सके। परंतु अमित को अपनी मंजिल को पाना था जो मिडिल क्लास वालों के लिए असंभव सा प्रतीत होता है।

अमित को यह पता था कि अभी तो शुरूआत हुई है, अपनी मंजिल पाने के रास्तों पर चलना तो बहुत ही कठिन है परंतु वह हार नहीं मान सकता जैसे मेरे बड़े भाई ने अपनी मेहनत के दम पर अपनी तकदीर खुद लिखी उसी तरह मैं भी अपनी तकदीर लिखूंगा। अमित अब अपनी पढ़ाई के साथ ही साथ प्राइवेट कंपनी में पार्ट टाईम काम भी करना शुरू किया। परंतु उसे वह काम अच्छा नहीं लगता था। सिर्फ पॉकेट खर्च के लिए वह ये काम किया करता था। जबकि उसे अपने बड़े भाई मनीष का पूरा सहयोग मिलता रहता परंतु अमित सोचता था कि हर वक्त इतना पैसा घर से कैसे लिया करें। परंतु ये प्राइवेट कामों में अमित को मन नहीं लग रहा था। अब उसने बैंकिग की तैयारी करने का निश्चय किया। अमित माता-पिता की बातों को ध्यान में रखकर सरकारी नौकरियों का फॉम भरने लगा। अमित को बैंकिग की तैयारी करना बहुत अच्छा लगने लगा, इसी बीच अमित को एक सरकारी नौकरी में कॉल लेटर आया, अमित ने बिना कुछ सोचे समझे उसे ज्वाईन कर लिया जिससे उसके माता-पिता को बहुत खुशी हुई। इसी बीच अमित को बैंकिग में भी कॉल लेटर आता है परंतु अमित अपने बड़े भाई से और अपने खास दोस्तों से बात करने पर बैंकिग के नौकरी को ज्वाईन नहीं किया, क्योंकि उसमें सैलरी तो बहुत अच्छी थी परंतु हर तीन-चार वर्षों के बाद ट्रांसफर वाला प्रावधान भी था। अमित ने कुछ बड़ा करने का सपना को छोड़ा नहीं था वह अमित के दिलों-दिमाग में बसा हुआ था। जो उसे एक जगह स्थाई होकर रहना उचित प्रतीत होने लगा। इसलिए उसने उस नौकरी को नहीं छोड़ा जिसमें उसकी सैलरी तो कम थी परंतु एक स्थायीपन है, उसे अपनी मंजिल तक पहुँचाने में मदद कर सकती है।

कुछ ही समय बाद उसकी बहन की पढ़ाई पूरी हो जाती है और फिर उसकी शादी हो जाती है। वह अपने पति के घर में रहने लगती है। कुछ समय बाद बड़े भाई मनीष की भी शादी हो जाती है। अमित को यह समझ नहीं आ रहा था, अमित सरकारी

नौकरी करके भी खुश नहीं रह रहा था। वह सोचता रहता कि अब अपने सपनों को कैसे साकार करे। अमित अपनी नौकरी के साथ ही अपने आप को और आगे बढ़ता देखना चाहता था। इसी बीच अमित अपने कॉलेज के मित्र के साथ बहुत ही क्लोज संपर्क में आ जाता है। उसका मित्र कोई और नहीं आज उसकी धर्म पत्नी है। जिसने अमित को बहुत बारीकी से समझा, अमित अपनी हर छोटी-छोटी बातों को उससे साझा किया करता था। धीरे-धीरे अमित उसे दिलो-जान से चाहने लगा था। वह भी अमित को हर तरह से समझने लगी थी। अमित के सपनों को वे अपना सपना समझ, सपनों को साकार करने के लिए वह हर संभव प्रयास करने लगी। हर कदम–कदम पर साथ देती, उसे मोटिवेट किया करती थी। अमित बहुत ढर कर रहता क्योंकि उसके माता-पिता पुराने ख्याल के हैं। माता-पिता उसके और उसकी मित्र के संबंध को क्या समझेंगे? किस तरह से अपने आप को उसके साथ होने की बात अपने परिवार वालों से कहे? कुछ समय बाद अमित ने अपने माता-पिता को वो हर बात बता दी। माता-पिता तो बहुत नाराज हुए परंतु वे अपने बच्चों की खुशियों को ध्यान में रखकर अपने आप को जीना पसंद करने वालों में थे।

उसने अमित की खुशी को ध्यान में रखते हुए बड़े बेटे मनीष से सभी बातें की, मनीष तो समझदार था उसने भी अपने छोटे भाई अमित की खुशी में अपना योगदान दिया, माता- पिता को समझाया- आज कल के युग में ये सब नहीं सोचा जाता है, लड़का–लड़की एक दूसरे को पसंद करते है तो बुराई कुछ भी नहीं है। समझाने से अमित के माता-पिता मान गए और इधर लड़की के माता-पिता को लड़की की खुशी से बढ़कर और कुछ भी नहीं चाहिए था । दोनों के परिवार के पूर्ण सहमति से ये शादी हो गई। अमित और मनीष दोनों भाई का प्यार उसी तरह से था जिस तरह से पहले हुआ करता था परंतु कुछ समय बाद बातें कुछ इस तरह से होने लगीं कि उसे कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था। माता-पिता अपने गॉव में और दोनों बहू अपने-अपने पति के पास रहने लगी। अमित और मनीष दोनों भाई गाँव बहुत कम आने लगे। वे अपने कामों में कुछ इस तरह डूबने लगे कि मानों गाँव में कोई है ही नहीं।

परंतु अमित को अपना कुछ और काम करना बाकी था, उसे अपने सपनों को साकार करना था। दोनों भाई और माता-पिता से वह बहुत प्यार करती लेकिन कारण कुछ भी हो उन्हें समय और अपना प्यार नहीं दे पा रही थी। इसी बीच अमित की पत्नी ने अमित के सपनों को साकार करने के लिए माता-पिता के आशीर्वाद से अपने ही गाँव में 6 दुकान शुरू की। उसके छोटे से सपनों तक पहुचने में पहली सीढ़ी मिल गई थी, कदम-कदम बढ़ना शुरू हो चुका था। और कुछ करने का मन में ठान रखा था जिसे वह किसी को भी बताना ठीक नहीं समझा। उसने कुछ पैसे बनाए और कुछ पैसे बैंक से कर्ज

के रूप में लेकर उसने अपना खुद के सपनों का महल बनाया फिर उसने इसी तरह से अपने सपनों को साकार करने में जुट गया इसी तरह से उसने कई और सपनों के महल खरीद रखें है और आगे वे शॉपिंग मॉल, कॉप्लेक्स, रेस्टोरेंट इत्यादि खोलने के लिए हुआ है। इस सपने को साकार करना ही उसका मकसद है। माता-पिता अमित की ऊचाईयों तक के पहुचने में उसकी पत्नी का योगदान देख बहुत खुश रहते हैं। आखिरकार सच क्या है? क्यों आज तक कोई नहीं जान पाया अमित ऐसा क्यों सोचने लगा कि उसे कुछ ऐसा करना है जिससे वे हर सपनों, जरूरतों को आसानी से खरीद सके। नौकरी से भी ज्यादा प्यार किसी और कामों में है इस सच का पता तो अमित को भी नहीं है आखिर क्यों? ...इसी सच की तालाश में सच तक पहुँचना अमित का सपना है जो आज भी पूरा नहीं हो पाया है कि सच क्या है ? और सच तक कैसा पहुंचा जा सके.....।

श्री अमित कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

"हिंदी बोलचाल की महाभाषा है।"

जॉर्ज ग्रियर्सन

मृगतृष्णा

रूपा स्कूल बस आ गई,जल्दी करो, माँ किचन से आवाज लगा रही थी। मैं आइने के सामने अपने आप को निहार रही थी। मैं अपने बालों को अच्छे से सवाँरने के बाद आइने देखती जा रही थी ताकि मैं सुन्दर दिख सकूँ। पोss-पोss... दोबारा मुझे हॉर्न बजने की आवाज सुनाई दी। इससे पहले की माँ मुझे किचेन से निकल कर डांट लगाती, मैं भागती हुई बैग को कन्धे में लटकाए बस में बैठ गई। ओह- मैं आपको बताना भूल गई,मैं 12वीं कक्षा की विद्यार्थी हूँ। मेरा नाम रूपा है। ये मेरी सहेली अनिशा है। मैं गांधी उच्च विद्यालय में पढ़ती हूँ। मेरे स्कूल में बहुत सारी लड़कियाँ दोस्त थी, पर ये मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी। घर-बाहर, पढ़ाई-लिखाई जहाँ जाना होता साथ-साथ जाते। मैं उससे, और वो मुझसे हर बात शेयर करती थी। पहले का तो पता नहीं पर अब के दिनों में लड़के भी लड़कियों के दोस्त होते हैं। मेरा विद्यालय मेरे घर से बहुत दूर था इसलिए हम लोग बस से आते-जाते थे। एक अंकल थे जो प्रतिदिन

उसी बस से आया-जाया करते थे। बस वाला (अंकल) मुझे अजीब सी नजरों से देखता रहता था और जब भी उसे मौका मिले, मुझसे बात करने कि कोशिश करता था। उसका इस तरह से घूरना मुझे अच्छा नहीं लगता था। राघव अनिशा का बॉयफ्रेंड था जो अनिशा से प्यार करता था। मेरे क्लास के बहुत सारी लड़कियाँ थी, जिसके बॉयफ्रेंड थे। उन सब को देखकर मेरा भी मन करता था कि मेरा भी

कोई बॉयफ्रेंड होता, सो मैं भी उसके साथ घूमती-फिरती,प्यार भरी बातें करती, पर मेरा वजन अधिक होने के कारण (मोटी) मेरा कोई बॉयफ्रेंड नहीं था। कुछ दिनों से अनिशा की तबीयत खराब थी, वो स्कूल नहीं आ रही थी। मैं अकेले ही स्कूल जा रही थी। मैं खुल के सारी बातें उसे फोन पर बताया करती थी।

मैं स्कूल बस में जैसे ही चढ़ी, बस वाले अंकल ने अपने पास वाली सीट की ओर इशारा करते हुए बैठने को कहा। आस-पास नजर दौड़ाई पर कहीं सीट नहीं थी, इसलिए मै चुपचाप जा कर बैठ गई। वो मुझे थोड़ी देर घूरते हुए देखता रहा। मैं डरी-सहमी सी अपनी नजरों को झुकाकर बैठी थी। उसने मुझसे पूछा- तुम्हारी दोस्त नहीं आ रही है? मैंने डर को छुपाते हुए अपनी आवाज में कॉन्फिडेंस लाते हुए कहा- उसकी तबीयत खराब है इसलिए थोड़े दिन बाद आयेगी। आज स्कूल में कार्यक्रम था। इसलिए सब लोग अलग-अलग तरह के कपड़े पहने हुए थे। जब मैं जाने लगी तो उसने मेरा नाम पुकारते हुए कहा- आज बहुत सुंदर लग रही हो। मैंने पलट कर उसकी ओर देखा फिर मैं चुप-चाप जाने लगी। मैंने इसके बारे में पहले भी अनिशा से बात की थी पर उसने कहा- अरे यार तू उसकी तरफ ध्यान मत दे, अपने काम से काम रख। मैं इतने दिनों में उससे ध्यान हटाने की कोशिश कर रही थी। पर आज किसी ने मुझे पहली बार खूबसूरत कहा और वो भी किसी लड़के ने। मैं अंदर ही अंदर बहुत ही खुश थी। घरमें आइने के सामने बैठकर अपने आप को निहारते ही जा रही थी। कुछ दिनों तक मैं उसी सीट पर बैठने लगी और वो मुझे इसी तरह से देखता रहता। अचानक उसने मुझे कहा-रूपा,तुमसे जरूरी बात करनी है। क्या तुम मुझे पाँच मिनट दे सकती हो? उसने मुझसे कहा-मैं इतने दिनों से देख रहा हूँ, तुम रोज स्कूल से ट्यूशन, ट्यूशन से घर चुप-चाप चली जाती हो। न किसी से बात करती हो, न ही किसी के साथ ज्यादा इधर-उधर घूमना-फिरना होता है। तुम इतनी खुबसूरत हो, पढ़ने-लिखने में अच्छी हो, तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड नहीं है क्या?तुम मुझे अपना दोस्त बनाओगी? मैं तुमसे प्यार करता हूँ रूपा..! मैं गुस्से से आग-बबूला हो गई। जोर से एक थप्पड़ गालों पर जड़ते हुए बोली कि आपको शर्म नहीं आती मुझसे ऐसी बातें करते हुए। आप मेरे अंकल के उम्र के हैं। मेरी उम्र के आपके बच्चे होंगे। उसने कहा-प्यार की कोई उम्र नहीं होती, प्यार तो किसी भी उम्र में हो जाता है। और ये सच है मैं तुमसे प्यार करने लगा हूँ। मैं चुप-चाप अपने घर चली आई और अपने कमरे में जा कर खूब रोने लगी।

कुछ दिनों तक मैंने स्कूल जाना छोड़ दिया। कुछ दिनों के बाद मैं दूसरे बस से जाने लगी। जैसे ही मैं स्कूल-गेट के पास पहुँची मेरी आँखें चौंक गई वो गेट पर खड़े होकर शायद मेरा ही इंतजार कर रहा था। क्योंकि इससे पहले मैंने उसे कभी इस जगह पर नहीं देखा था। वो मेरे पीछे आने लगा था और गिड़गिड़ाते हुए मुझसे माफी मांगने लगा। मैं

तेज कदमों से क्लास के अन्दर चली गई। कई दिनों तक ये सिलसिला चलता रहा। कभी मेरी ट्यूशन क्लास के पास गुलाब लेकर खड़ा रहता तो कभी मेरे घर जाने वाली गली में। अंत में मैंने उसे माफ कर दिया फिर भी वो कहता रहा तुम मुझसे प्यार करो या ना करो मैं तुमसे प्यार करता रहूंगा। मैं इन सब चीजों से तंग आ गई थी। जैसे ही मैं घर गई माँ ने खिड़की से इशारा करते हुए पीछे वाले कमरे से आने को कहा, मैं कुछ समझ पाती इससे पहले ही माँ ने कंधे से बैग हटाकर मेरे हाथ में साड़ी थमा कर चली गई। जाते-जाते बोलकर गई कि इसे पहन कर हाथ में चाय का ट्रे लेकर पापा के कमरे में आ जा। मेरी शादी के लिए पापा ने लड़के वालों को मुझे देखने के लिए बुलाया था। उन्होंने मुझसे कुछ सवाल पूछे। बिना बोले वो चले गए। जब पापा ने फोन कर के पूछा वो लोग बोले कि लड्की बहुत मोटी है, इसलिए लड़के को पसंद नहीं आई। मैं गुस्से में चिल्लाने लगी। मैं अभी पढ़ना चाहती हूँ.. माँ? क्या जरूरी था लड़के वालों को बुलाना? मैं पूरी रात इस बस वाले के बारे में सोचने लगी, मुझे अब उसकी हर बात अच्छी लगने लगी।

अंत में मैंने फैसला किया कि मैं उससे मिलूँगी कि मैंने उसे फोन किया।उसे कॉफी शॉप पर बुलाया और अपने प्यार का इजहार कर दिया। फिर रोज मिलने लगे। वो मुझे अक्सर गिफ्ट दिया करता था। उसके साथ घूमना-फिरना अच्छा लगने लगा था।एक दिन स्कूल में सभी दोस्तों ने मिलकर बाहर घूमने का कार्यक्रम बनाया। मैंने राघव (अनिशा का बॉयफ्रेंड) से कहा तो उसने कहा कि अनिशा के बिना नहीं जाऊंगा। तो मैंने भी कहा मैं भी नहीं आऊंगी। मैंने राकेश (बस वाला दोस्त) से पूछा। जब राकेश को पता चला तो उसने बोला मैं जाऊँगा तुम्हारे साथ ही। तुम बोर कैसे होगी? बहुत जिद्द करने लगा तो मैं मान गई। यहाँ जाकर हमने खूब मस्ती की। पहली बार में अपने घर से अकेली इतनी दूर आई थी। सभी लोग पूरा दिन घूमने के बाद रात को अपने कमरे में चले गए। लड़के और लड़कियों के टिकट की अलग-अलग बुकिंग थी। मैं ऐसे ही जा रही थी कि तभी राकेश आया मेरे लिए गिफ्ट लेकर। मैं बोली अभी मैं थकी हुई हूँ प्लीज, कल सुबह मिलेंगें। उसने कहा ठीक है। मैं बस थोड़े देर के लिए आया हूँ, तुम गिफ्ट खोलकर देखो तो उसके बाद मैं चला जाऊँगा। मैंने उसे कमरे में आने को कहा। उसमें शराब की बोतल और एक नाइट ड्रेस थी। मैं गुस्से से बोली- ये सब क्या है। तुम जानते हो न मुझे इन सब चीजों से नफरत है। उसने मुझसे कहा- तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है। ये गिफ्ट तुम्हारे लिए बहुत प्यार से लाया था। तुम इसमें बहुत खूबसूरत लगोगी और एक घूंट शराब पी लेने से कुछ नहीं होता, उससे थकान दूर हो जाती है।और फिर किसको पता चलेगा कि तुमने शराब पी है। सुबह तक सब ठीक हो जाएगा। तुम्हें मुझ पर भरोसा ही नहीं है तो मैं जा रहा हूँ। इतनी बातें सुनने के बाद मैंने उसका हाथ पकड़कर रोक किया। उसने खुशी से मुझे अपनी

बाँहों में भर लिया। मुझे नींद आ गई। मुझे पता ही नहीं चला।

सुबह-सुबह बहुत शोर हो रहा था। मेरे कमरे के पास मेरी सहेलियाँ दरवाजा पीट रही थीं। रूपा दरवाजा खोलो..!देर हो रही है। घर नहीं जाना है क्या? सहसा मैं उठी। राकेश भी नजर नहीं आ रहा था। मैं जैसे ही उठने की कोशिश की, मेरे बदन में दर्द था। मेरे कपड़े पर ख़ून के धब्बे थे। शराब की बोतल बिखरी पड़ी थी। कमरा अस्त-व्यस्त था। मैंने उसे फोन करने की बहुत कोशिश की पर फोन स्विच ऑफ जा रहा था। मैंने जैसे-तैसे खुद को संभाला। पर मेरे आँसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। मैं घर में जाकर चुपचाप कमरे के दरवाजे बंद कर ली। माँ पूछती रही- क्या हुआ? कुछ बोलती क्यूँ नहीं? पापा ने भी बहुत कोशिश की। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि वो मुझे छोड़कर जा चुका था।

मैं अपने आप को कोसे जा रही थी तभी अनिशा की आवाज सुनाई दी। वो मुझसे बार-बार बोल रही थी- रूपा दरवाजा खोल,मैं तुम्हारी दोस्त अनिशा हूँ, तू (प्लीज दरवाजा खोल,खाना खा ले) देख तू अपनी बेस्ट फ्रेंड को नहीं बताएगी, मेरी तबीयत खराब थी, फिर भी मैं तुझसे मिलने चली आई। दरवाजा खोल न। तब मैंने दरवाजा खोला और उसके गले लग कर खूब रोई। और मैंने उसे सारा किस्सा उसे कह सुनाया। तब उसने मुझे धीरज देते हुए कहा- मैं अब उसे अपने तरीके से देखती हूँ। तुम जैसी भी हो वैसे ही बहुत खूबसूरत हो। बॉडी या चेहरा खूबसूरत होने के लिए मायने नहीं रखता है। जो जिन्दगी के सुख-दुःख, सही-गलत हर समय में हमारे साथ खड़ा है वह सच्चा साथी होता है। बस तू उसका नंबर और पता बता, वो कहाँ रहता हूँ? मैने कहा- आज तक उसने कभी बताया नहीं कि वह कहा रहता है? और न ही कभी पूछने की जरूरत पड़ी। मेरे पास नाम और नं० के अलावा कुछ नहीं था। तभी अनिशा ने कहा वो

बहुत ही शातिर था जो तुझे कुछ नहीं बताया, नाम और नं. तो आये दिन बदलते रहते हैं। मुझे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था। उसके सारे तोहफे मैं कमरे से बाहर फेंक रही थी तभी याद आया कि मैंने उसे एक बड़ी गिफ्ट की थी ऑनलाइन, तभी मैंने उसका पता पूछा था। मैने उसे एक डायरी में नोट किया था। मैंने अनिशा को बताया। अनिशा तुरंत राघव के साथ उस पते पर पहुँची तो पता चला कि वो एड्रेस उसके किसी दोस्त का था। उसके दोस्त से मैंने उसको घर का पता पूछा। और उसके घर पर हम सब पहुंचे। वह एक चॉल में रहता था। उसकी पत्नी सिलाई कर रही थी। मेरे मोबाईल में उसका एक फोटो था। मैंने जैसे राकेश का नाम लिया तो उसने मना किया।(मैं किसी राकेश को नहीं जानती) तभी मैंने उसे उसका फोटो दिखाया तब वो बोली- ये तो मेरा पति बवन (राकेश का असली नाम) है। मेरे भी बच्चे हैं। अतुल और प्रिया। प्रिया की उम्र 13 साल और अतुल की उम्र 10 साल थी। अनिशा ने उसे हाल कह सुनाया, तभी उसकी पत्नी बोलने लगी- मैडम, मेरा पति बहुत घटिया है। वो न जाने कितनी लड़कियों की जिन्दगी बर्बाद कर चुका है। मुझे भी बहुत मारता-पीटता है। इसलिए मैं इस चॉल में रहती हूँ और सिलाई करके अपने बच्चों को पालती हूँ। वो बस साल में एक बार आता है मेरे बेटे के जन्मदिन पर। मेरे बेटे का जन्मदिन 15 अक्टूबर को है। आप उस दिन उसे पकड़ सकते हो। तभी राघव ने कहा कि 15 अक्टूबर तो परसों ही है। पुलिस शिकायत की तो पता चला कि उसपर एक मर्डर केस और रेप केस चल रहे थे। वो हर बार बच निकलता था लेकिन इस बार पकड़ा गया।

मैं कहूँगी कि आप पहले अपने से प्यार कीजिए। किसी के प्यार के मोहताज न रहिए। आप जैसे भी हैं परफेक्ट हैं। ये बात अनिशा ने भी कही थी। मैं अनिशा जैसी दोस्त को धन्यवाद देना चाहती हूँ जो मुश्किल वक्त में भी साथ खड़ी रही है। अनिशा जैसी दोस्त भगवान हम सब को दे। भगवान हर इंसान में कुछ न कुछ ख़ूबी जरूर देता है। जिस दिन आप उस ख़ूबी को परख लेगें, उस दिन हमारे लिए हमारे ऐब भी हुनर जैसे लगेंगे फिर पूरी दुनिया हमसे प्यार करेगी।

श्री गौरव कुमार
एमटीएस

वंदे मातरम के 25 वें अंक के लोकार्पण की झलकियाँ

गुरु-दक्षिणा

एक बार एक शिष्य ने विनम्रतापूर्वक अपने गुरुजी से पूछा-'गुरुजी, कुछ लोग कहते हैं कि जीवन एक संघर्ष है कुछ अन्य कहते हैं कि जीवन एक खेल है और कुछ जीवन को एक उत्सव की संज्ञा देते हैं। उनमें कौन सही है? गुरु जी ने तत्काल ही बड़े धैर्य से उत्तर दिया- 'पुत्र, जिन्हें गुरू नहीं मिला उनके लिए जीवन एक संघर्ष है, जिन्हें गुरु मिल गया उनका जीवन एक खेल है और जो लोग गुरू द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने लगते हैं, उनका जीवन उत्सव की तरह व्यतीत होता है। यह उत्तर सुनने के बाद भी शिष्य पूरी तरह से संतुष्ट न हो सका। गुरुजी को इसका आभास हो गया। वे कहने लगे-मैं तुम्हें इस सन्दर्भ में एक कहानी सुनाता हूँ,ध्यान से सुनोगे तो स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर पा सकोगे।

उन्होंने कहानी कहनी आरंभ की। एक बार की बात है। किसी गुरुकुल में तीन शिष्यों ने अपना अध्ययन सम्पूर्ण कर अपने गुरुजी से यह बताने के लिए विनती की कि उन्हें दक्षिणा में, उनसे क्या चाहिए? गुरुजी तो पहले मंद-मंद मुस्कराये और फिर बड़े स्नेह-पूर्वक कहने लगे- मैं तुमसे गुरू-दक्षिणा में एक थैला भर के सूखी पत्तियां चाहिए। वे तीन मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें लगा कि वे बड़ी आसानी से अपने गुरुजी की इच्छा पूरी कर लेंगे। सूखी पत्तियाँ तो जंगल में सभी जगह बिखरी ही रहती हैं। वे उत्साहपूर्वक एक स्वर में बोले- जैसी आपकी आज्ञा गुरू जी।

अब वे तीनों शिष्य चलते-चलते एक समीप के जंगल में पहुंचे। लेकिन यह देखकर कि वहाँ पर तो सूखी पतियाँ केवल मुट्ठी भर ही थी, उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वे सोच में पड़ गए कि उधर से आता हुआ किसान दिखाई दिया। वे उसके पास पहुंचे और उनसे एक थैली सूखी पत्तियों की याचना करने लगे। किसान ने अपनी असमर्थता जाहिर की, क्योंकि उसने सूखी पत्तियों का उपयोग ईंधन के रूप में कर लिया था। वे तीनों आगे बढ़े और उनकी मुलाक़ात एक व्यापारी से हुई। व्यापारी ने भी पैसे की लालच में पत्तियों को बेच दिया था। यद्यपि व्यापारी ने ये बताया कि उसने पत्तियाँ एक बूढ़ी माँ से खरीदी थीं। वे तीनों उस बूढ़ी माँ के पास गए और पत्तियों के बारे में पूछा। बूढ़ी माँ ने पत्तियों से तरह-तरह की औषधि बना ली थी। वे तीनों हताश होकर गुरुकुल लौट आए और गुरू जी से कहा- गुरू जी, हम आपकी इच्छा पूरी नहीं कर पाए, हमें क्षमा कीजिए।

गुरू जी प्रेम-पूर्वक बोले- निराश न हो वत्स ! तुम सबने ये ज्ञान पाया कि सूखी पत्तियाँ भी व्यर्थ नहीं होती हैं। यही मेरी गुरू-दक्षिणा है । तीनों शिष्य गुरूजी को प्रणाम कर अपने घर चल दिए। उन्हें समझ आ चुका था कि हमारे जीवन का सबसे बड़ा उत्सव पुरुषार्थ होता है। पूर्वाग्रह से मुक्त व्यक्ति अपनी बातों से कभी किसी को आहत नहीं करता है।

श्री आनंद कुमार पांडेय
(सहायक लेखा अधिकारी)

निर्णय (भाग-2)

मैं बार-बार 'निर्णय' पर फोकस करने को कह रहा हूँ। बार-बार अपने द्वारा लिए गए निर्णय पर फोकस करें। अब आप सोच रहे होंगे कि ऐसी क्या खास बात है 'निर्णय' लेने में जो हम लोग भूल रहे हैं? इसके पीछे वजह क्या है। वजह आप खुद जानते हैं। अभी मैं जो भी बोलूंगा या जो कुछ भी बताऊँगा तो आप इसे जानेंगे तो यह बात आपको बहुत साधारण लगेगी। मैं निर्णय' पर फोकस करने को बोल रहा हूँ क्यों कि ये आप ही हैं जो निर्णय ले रहें हैं और ये आपके ही निर्णय है।

बात बहुत छोटी है पर अच्छे से सोचिए कि मैं क्या कहना चाह रहा हूँ। मेरे कुछ भी कहने का स्पष्ट रूप से अर्थ यही है कि यह जीवन/जिन्दगी आपकी है। आपका सौभाग्य होगा या दुर्भाग्य, उसका परिणाम आपको ही मिलेगा। कल अगर सुख होगा तो वह आपका होगा और अगर दुःख होगा तो भी वह आपका होगा। हाँ, यह जरूर है कि आप अपने सुख-दुख को किसी के साथ बाँट जरूर सकते हैं। पर ये सुख-दुख तो हैं आपके ही। मैं जानता हूँ कि आपने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया है। ये दुनिया संघर्ष से भरी है और संघर्ष ही जीवन है। दुनिया Survival of the Fittest के सिद्धांत पर कार्य करती है इसलिए मैं यही कहूंगा कि गलत 'निर्णय' लेकर अपने अस्तित्व को खतरे में मत डालिए।

जे. जे. रूसो (J.J. Roussou) ने बहुत अच्छा कहा है-

" एक व्यक्ति पैदा तो स्वतंत्र होता है पर, हर जगह वह जंजीरों से जकड़ा होता है"। आपके जन्म लेने के साथ ही आप 'निर्णय' से घिर गए थे। बस यह बात अब समझ में आने लगी है। और जब बात समझ में आ गई है तो अभी से आप अपने निर्णय लेने के नजरिए को बदल डालिए और 'Good Luck' जैसे शब्द की रचना (Create) करिए। मैं यह जरूर कहूँगा कि हर वक्त निर्णय लेना एक कठिन कार्य है। पर एक दिन यह आपके व्यवहार (Behaviour) मे शामिल हो जाएगा और आपने कब से निर्णय लेना शुरू कर दिया यह पता ही न चलेगा। ...एक बार शुरुआत कर के देखिए, जो मैं कह रहा हूँ, और अपना भविष्य बेहतर बनाने के प्रयास में शामिल हो जाइए। "सही वक्त पर सही निर्णय लेकर खुद को बेहतर बना लो – अगर वक्त और माहौल ने निर्णय लेना शुरू कर दिया तो दर्द बहुत होता है। "

श्री अनिल कुमार
एमटीएस

होली आई रे

होली आई, होली आई,
रंगों की बौछार लायी।
सब नाचेंगे, सब गाएँगे,
यार- परिवार संग होली मनाएंगे।

कोई छुट्टी लेकर घर आया,
किसी को दोस्त का न्योता आया।
रंग – गुलाल की हुई तैयारी,
भांग पिचकारी की है बारी।

फाग के सुर से गूंजी है गलियां,
संग चली मस्तानों की टोलियाँ।
एक ही शोर, गूँजे चहुओर,
होली की हुल्लोड़, होली की हुल्लोड़।

बाहर फैली रंगों की खुशबू,
घर में बने भोज पकवान।
माँ, चाची, भाभियाँ झूमी,
यही है इस पर्व की पहचान।

सबसे न्यारा, है ये त्योहार,
प्यार की भाषा, इसकी पहचान।
लगाओ रंग, खाओ- पियो,
जीवन को नए ढंग से जियो।

यही सिखाती होली हमें,
पूरी धरती है, हमारा परिवार।
मन के द्वेष, बैर सब छोड़ो,
प्यार से सबसे रिश्ता जोड़ो।

श्रीमती सुनीता राउत
एमटीएस

कमरा नम्बर 13

लावण्या आज सुबह से ही खुश थी। उसे उसके पसंदीदा कॉलेज में प्रवेश मिल गया था। उसके सपनों को तो पर ही लग गये थे। पिछले दो महीनों से तो उसकी शॉपिंग ही नहीं खत्म हो रही थी। नये कॉलेज में जाना है, वहाँ नये-नये दोस्त बनेगें। कभी घूमने जायेंगे, कमी मूवी देखने जायेंगे, ढेर सारी मस्ती करेगें इत्यादि......ऐसे ही बहुत सारे ख्याल उसके दिमाग में आ रहे थे। वह बहुत उत्साहित थी। वहीं एक तरफ लावण्या की माँ जया जी को बहुत घबराहट थी । लावण्या अकेली कैसे रहेगी? पता नहीं वहाँ कैसे-कैसे लोग होगें ? खाना ठीक-ठाक मिलेगा कि नहीं जैसी बहुत चिन्ताएं थीं जो एक माँ के लिए स्वाभाविक होती हैं।

“अरी मेरी भाग्यवान! तुम इतनी चिन्ता क्यों कर रही हो? हम दोनों तो लावण्या के साथ चल ही रहे हैं। वहाँ जाकर तुम अच्छे से सब जाँच-परख कर लेना और हम लोग दिल्ली में तब तक रहेंगे जब तक तुम्हारा मन पूरी तरह से भर नहीं जाता। एक और आइडिया है मेरे पास।” उत्तम जी बोले।

“वो क्या पापा ?”

लावण्या उन दोनों के पास आकर बोली।जया जी जिज्ञासा भरी नज़रों से उत्तम जी को देखने लगीं।

“वैसे ये बात है कि ये आइडिया जो अभी मेरे दिमाग में आया है , ये है बड़ा जोरदार। लावण्या तो सुन के उछल ही पड़ेगी और खुश हो जाएगी।” - उत्तम जी गंभीर मुद्रा में बोलें।

“ अरे ! आप अपने आइडिया की ही इतनी तारीफ खुद करके अपनी पीठ थपथपाते रहेगें या बतायेंगे भी कुछ अपने इस “जोरदार आइडिया...” के बारे में।” जया उतावली हो गयी थी ।

“अरे नहीं! नहीं! ये आइडिया तो शानदार है लेकिन..”

“लेकिन क्या”

“लेकिन इसमें एक मुश्किल है ?”

“ कैसी मुश्किल ... ?”

“हाँ! इसमें एक परेशानी की बात है।”

“अरे ! कैसी परेशानी ?”

जया जी अब बहुत परेशान हो गयी थीं।

“परेशानी यही है कि अब शायद इसके कॉलेज वाले एडमिशन नहीं देंगे नहीं तो आपको भी लावण्या के साथ उसके रूम में ही ठहरा देता।” उत्तम जी शांत होकर बोले।

“ये बात तो है।”

बिना समझे बोल तो गयी जया जी, पर कुछ

देर बाद समझ में आया कि यहाँ पर तो इतनी देर से उनकी उनकी खिंचाई चल रही थी। गुस्से में उनकी भौहें तन गईं और बाप-बेटी को देखकर गुस्से से मुँह फुला कर वहाँ से चल दीं।

कुछ दिन बाद हॉस्टल में

'मुझे समझ में नहीं आता लावण्या कि तुमने उस 'बी' ब्लॉक के 13 नम्बर कमरे को ही क्यूँ चुना रहने के लिए। उधर तो दिन में भी कोई नहीं जाता और तो और उस कमरे के बारे में जाने कितनी ही डरावनी कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। पर एक तू है जिसे कोई फर्क ही नहीं पड़ता। लावण्या की सहेली बैला लावण्या को समझाये जा रही थी। "अरे नैना! मैंने तो इसीलिए वो जगह चुनी हैं कि कितनी शान्ति है वहाँ, कोई आता-जाता नहीं। और वहाँ से अपने हॉस्टल के गार्डेन का बहुत खुबसूरत नजारा भी देखने को मिलता है। ठंडी-ठंडी हवाएँ आती हैं वहाँ। और मैं तो २ हफ्तों से हूँ वहाँ । मुझे तो अभी तक कोई परछाईं भी नजर नहीं आयी। तू बेकार में ही डर रही हैं और लोगों की उल्टी- पुल्टी कहानियाँ सुनाकर मुझे भी डराने की कोशिश कर रही है।" - लावण्या मुस्कुराते हुए बोली।

"तुझको समझाना बेकार है।"

मैना अपने सर पर हाथ रखते हुए बोली।

"फिर तू बेकार में कोशिश कर क्यूँ रही है ? चल आज शाम मे गप्पू के यहाँ चल कर कचौड़ियाँ उड़ायेगे ?" लावण्या, नैना के गले पड़ते हुए बोली।

"लावण्या ! पूरा हॉस्टल खाली हो जाएगा है तू यहाँ अकेली क्या करेगी? चल हमारे साथ मेरे घर पर " वहाँ एक सप्ताह रह कर जब तेरे मम्मी-पापा आसाम से घर वापस आ जाएं तब अपने घर चली जाना।" नैना, लावण्या को हॉस्टल में अकेले रुकने से मना कर रही थी। दरअसल गर्मी की छुट्टियों के कारण कॉलेज पूरे एक महीने के लिए बन्द होने वाला था। सभी अपने घर जा रहे थे। लावण्या की मौसी की अचानक से तबियत बिगड़ गयी।उन्हें देखने के लिए उसके मम्मी-पापा गये हुए थे और वो अगले हफ्ते वापस आने वाले थे। अतः लावण्या ने भी अगले हफ्ते का टिकट कराया था। वह एक सप्ताह हॉस्टल में रह कर पढ़ाई करना चाहती थी, क्योंकि कॉलेज खुलते ही परीक्षाएँ भी होने वाली थीं। वैसे भी लावण्या को शांति बहुत पसंद थी इसलिए उसने वहीं रहना पसन्द किया।

कल सुबह में लावण्या का घर जाने का टिकट था। वह रात में बहुत देर तक जाग कर पैकिंग कर रही थी। तभी उसने बच्चे के रोने की आवाज सुनी। इधर दो-तीन दिनों से रात में बच्ची के रोने या हँसने की आवाजें सुनाई देती थी और कुछ लोगों के बात करने की भी आवाज सुनाई देती थी। हालांकि उस समय वह नींद में रहती थी तो उसे लगता था कि वह कोई सपना देख रही होगी। परन्तु आज फिर जब उसे आवाजें सुनाई देने लगी तो वह अपने कमरे से बाहर निकल कर सीढ़ियों से उतर कर आवाज की दिशा में जाने लगी। उस बिल्डिंग के सबसे नीचे के तल पर आखिरी कमरे में उसे लाइट जलती हुई

दिखाई दी। वह दबे पाँव आगे बढ़ी और एक झटके में जाकर वो दरवाजा खोल दिया। कमरे में उसके कॉलेज का माली था। कमरे में और कई लोग थे। उसके रामू काका भी..। "आप यहाँ ? और ये सब लोग कौन है?"

रामू, लावण्या को वहाँ देखकर सकपका गया और हाथ जोडते हुए बोला - बिटिया ! ये मेरा परिवार है। हम जिन साहब के यहाँ रहते हैं वे बड़े दयालु हैं और उनकी बिटिया भी इसी कॉलेज में पढ़ती है। साहब तो बड़े दयालु हैं, उन्होंने अपने घर में ही एक छोटी सी कोठरी हमें दे रखी है। परन्तु साहब की बिटिया हमें बिल्कुल पसन्द नहीं करती । साहब उसके वहाँ पहुँचने हमें कुछ दिनों के लिए वहाँ से जाने को कहते हैं और मैं अपना परिवार लेकर यहाँ आ जाता हूँ। "'बिटिया ! दया कर। किसी को ये बात मत बताना, वरना हमारी नौकरी चली जाएगी।"

रामू गिड़गिड़ाते हुए बोला।

"पर काका! यहाँ पर तो परिवार लेकर आना मना है ना।"

"हाँ बिटिया । इसलिए तो हमलोग कुछ दिन यहाँ रहते हैं छुपकर।

"काका ! तो गलत है ना। आप प्रिसिंपल मैडम से सब बात कहियेगा। वे यहाँ रुकने के लिए आपको मना नहीं करेंगी।"

"नहीं बिटिया ! ऐसा मत करो। हमारी नौकरी छीन ली जाएगी"

"लेकिन काका.."

" आह....."

लावण्या के शब्द हलक में ही रह गये थे और वह अपना सर पकड़ कर गिर पड़ी। पूरा जमीन ख़ून से सन गया था और लावण्या का शरीर नीचे गिर कर छटपटा रहा था।

"तूने क्या किया ? फिर से एक और हत्या कर दी। रामू काँपने लगा था।"

"क्या करता भैया, कब से तो आप इसको समझा रहे थे और इसे अंजाम भुगतना ही था। इस बिल्डिंग में पहले हम कितने आराम से रह पाते थे पर इसके आने के बाद हमलोगों की आजादी हमसे छिन गयी थी क्योंकि इसको शांति चाहिए थी। इसलिए बाकी सब बच्चों की तरह दूसरे ब्लॉक में ना जाकर इसको वहीं पर रहना था।

"लो ! अब इसे पूरी शांति मिल गयी । रामू का भाई बोला। अब क्या करेगें हम ?"

"करना क्या है ? हम अब पहले की तरह आजादी से इस बिल्डिंग के किसी भी कमरे में रह लेंगें। बच्चों में अब और ज्यादा खौफ बढ़ जाएगा तो कोई वर्ष के किसी भी महीने में यहाँ रहने का साहस नहीं करेगा।"

रामू का भाई हँसते वहाँ से चला गया।

आरती शर्मा
लेखाकार

वंदे मातरम के 25 वें अंक के लोकार्पण की झलकियाँ

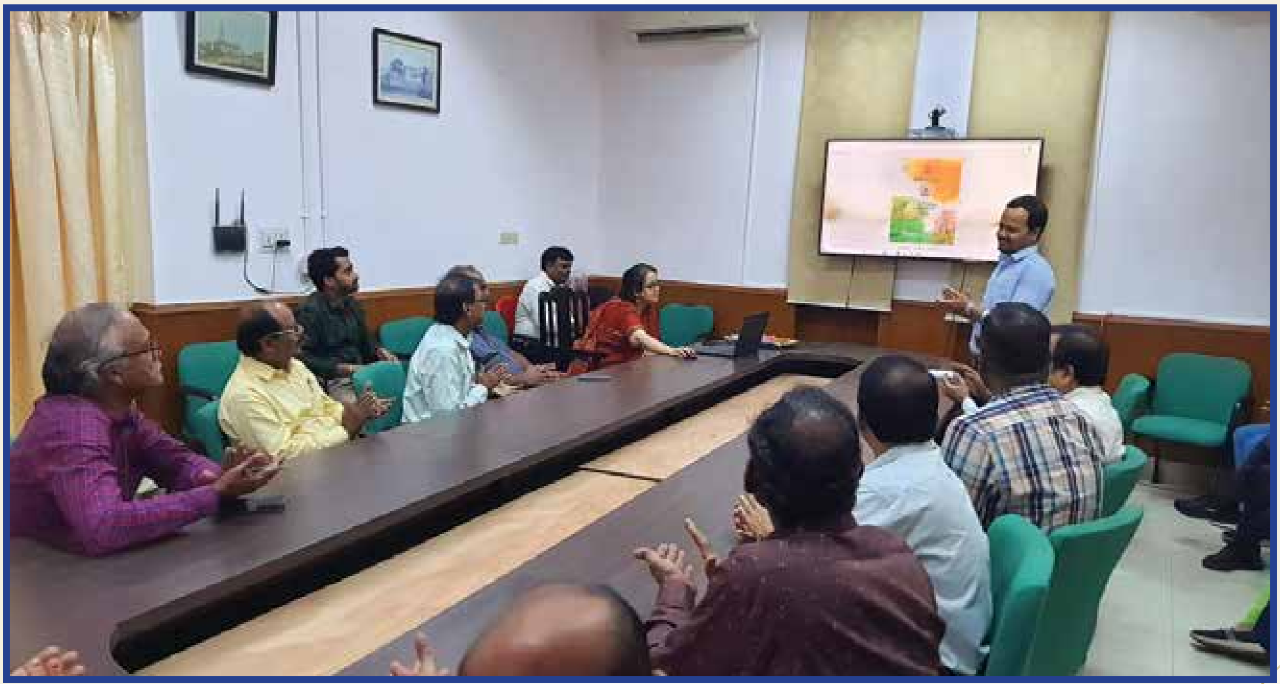

ऑडिट दिवस समारोह 2022 का सांस्कृतिक कार्यक्रम

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022 का सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेंजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001